सुगंध - 2

कक्षा - 10 हिंदी (द्वितीय भाषा)

Class-X Hindi (Second Language)

संपादक

प्रो. टी.वी. कट्टीमनी

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी

क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे

हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली

सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

विशेष सलाहकार

श्री सुवर्ण विनायक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री

भारतीय भाषा आधार पत्र संपादक,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रधान समन्वयक

श्री सय्यद मतीन अहमद

समन्वयक, हिंदी विभाग,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्र प्रदेश

सह - समन्वयक

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्र प्रदेश

डॉ. राजीव कुमार सिंह

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्र प्रदेश

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्री जी. गोपाल रेड्डी

निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं.प्र.

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी

अध्यक्ष, सीएंडटी, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं.प्र.

श्री बी. सुधाकर

निदेशक, सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस, आ. प्र.

विद्या से बढ़ें। विनय से रहें।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

क़ानून का आदर करें। अधिकार प्राप्त करें।

© Government of Andhra Pradesh, Hyderabad

New Edition

First Published 2014

All rights reserved

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Andhra Pradesh.

This Book has been printed on 70 G.S.M. SS Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by A.P. Government

Printed in India
at the Andhra Pradesh Govt.Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Andhra Pradesh.

आमुख

आंध्र प्रदेश में हिंदी भाषा शिक्षण द्वितीय भाषा के रूप में छठवीं कक्षा से आरंभ किया जाता है। इस स्तर पर बालकों की आयु प्रायः ग्यारह-बारह वर्ष की होती है। इस आयु में बालक भाषा का अर्थ और महत्व समझते हैं। साथ-साथ अपनी मातृभाषा व अंग्रेज़ी की भी जानकारी रखते हैं। इतना ही नहीं वे अपने अड़ोस-पड़ोस से भी कुछ हिंदी भाषा के शब्द सीख लेते हैं। हमें ज्ञात है कि बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इन बातों व एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एससीएफ-2010 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य-पुस्तक का सृजन किया गया है।

त्रिभाषा सूत्र के अनुसार बालकों को माध्यमिक स्तर पर कम-से-कम तीन भाषाओं का ज्ञान कराना है। इस उद्देश्य से बालकों को छठवीं से दसवीं कक्षा तक द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का ज्ञान कराना है। छठवीं कक्षा से हिंदी शिक्षण का आरंभ होता है। इस स्तर पर छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना, छात्रों को जिज्ञासु बनाना व सहज, व्यावहारिक एवं मनोरंजक रूप से भाषार्जन के लिए प्रेरित करना हिंदी शिक्षण के उद्देश्य रहे हैं। सातवीं कक्षा के स्तर पर सुनना,बोलना कौशलों में छात्रों को सक्षम बनाने का प्रयास किया गया है। आठवीं कक्षा के स्तर पर पठन व लेखन के साथ-साथ सृजनात्मकता में सक्षम बनाने के अनुरूप पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है।

इस पाठ्य-पुस्तक में गीत, कविताएँ, कहानियाँ, भाषण लेख, साक्षात्कार, समीक्षा, पत्र, निबन्ध आदि के साथ-साथ रोचक द्रुत पाठ भी दिये गये हैं। इन्हें बालकों के व्यावहारिक जीवन से जोड़ा गया है। इनके द्वारा छात्रों में, सोच-विचार कर उत्तर देना, तुलना कर निष्कर्ष निकालना और नवीन ज्ञान का संबंध पूर्व ज्ञान से जोड़ने की प्रवृत्ति का विकास होता है। इससे बालक को सृजनशीलता के भरपूर अवसर मिलते हैं। वे अर्जित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान की रचना करते हैं। ये अभ्यास सहज व व्यावहारिक रूप से भाषार्जन करने में सहायक हैं।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद विद्या भवन संदर्भ केंद्र के संसाधक गण श्री कुमार अनुपम एवं प्रदीप कुमार झा के सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता है। उन समस्त रचनाकारों के प्रति भी आभार व्यक्त करता है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गयी हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली तथा अन्य सभी राज्य परिषदों, जिन्होंने इस पुस्तक को साकार रूप देने में सहयोग दिया है, उनके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। इसके निर्माण में सहयोग देने के लिए सभी जिला शिक्षा अधिकारियों, उप विद्याधिकारियों एवं प्रधानाध्यापकों को धन्यवाद। इस पाठ्यपुस्तक के विकास के लिए भाषाविदों, अध्यापकों, अभिभावकों और छात्रों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्ल कुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं, इसकी यह गुलसिताँ हमारा।।
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, उसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम वतन हैं, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

अध्यापकों से

- इस पाठ्य-पुस्तक में 10 पाठ हैं। इन्हें निर्धारित वार्षिक पाठयोजना के अनुसार पढ़ायें।
- इस पाठ्य-पुस्तक में अपेक्षित कौशलों व सामर्थ्यों की सूची दी गयी है। इसी के आधार पर छात्रों में दक्षताओं और उच्चतम बौद्धिक कौशलों (HOTS) का विकास करने पर ध्यान दें।
- पाठ का अध्यापन संदर्भोचित चित्र (उन्मुखीकरण चित्र) से आरंभ हुआ है। इनसे संबंधित विचारशील प्रश्न पूछें। पाठ संबंधी चित्र दिये गये हैं। इनके माध्यम से छात्रों से बातचीत करवायें। दिये गये प्रश्नों के आधार पर बालकों को विविध दृष्टिकोण से सोचने का अवसर दें।
- पाठ का अध्यापन संदर्भोचित चित्र (उन्मुखीकरण चित्र) से आरंभ हुआ है। इनसे संबंधित विचारशील प्रश्न पूछें।
- हर पाठ के अभ्यास में अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता, भाषा की बात व परियोजना कार्य संबंधी अभ्यास दिये गये हैं। इन सभी का सदुपयोग कर छात्रों में शैक्षिक मापदंडों का समुचित विकास करने का प्रयास करें। कविता, गीत, पद्य, वार्तालाप या कहानी आदि पाठों के लिए सुनने-बोलने संबंधी क्रियाएँ कक्षा में सामूहिक रूप से करवायें। सबको स्वतंत्र व सहज रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें।
- सी.सी.ई. (सतत समग्र मूल्यांकन) को ध्यान में रखते हुए दक्षताओं का विकास करें।
- इस पाठ्य-पुस्तक में बालक के व्यावहारिक जीवन में आनेवाली शब्दावली का प्रयोग किया गया है। इस पर ध्यान देते हुए भाषा-अधिगम की प्रक्रिया का संबंध बालक के जीवन से जोड़ें ताकि बालक सरलता से भाषागत विकास कर सकें।
- यह पुस्तक बालक को पुस्तकालय की विविध पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरणा देती है। अतः इस दिशा में बालकों को प्रेरित करें।
- हर इकाई में एक द्रुत पाठ भी दिया गया है। छात्र इस पाठ का पठन करके आत्मसात करने की क्षमता का विकास कर सकें। इस संदर्भ में अध्यापक छात्रों का सहयोग व मार्गदर्शन करें।
- विविध पाठों के आधार पर संदर्भानुसार छात्रों को मानव मूल्य, पर्यावरण, शांति, अहिंसा, संवैधानिक मूल्य आदि का व्यावहारिक प्रशिक्षण दें, जिससे छात्र आदर्श नागरिक बन सकें और अपने भावी जीवन का निर्माण कर सकें।
- पाठ्यपुस्तक एक साधन मात्र है, साध्य नहीं। इस से छात्रों को विविध संचार माध्यमों से जोड़ने का प्रयास करें।

छात्र अनिवार्य रूप से निम्नलिखित दक्षताएँ प्राप्त करें -

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

* पद्य, गीत, कविता, वार्तालाप आदि सुनकर समझ सकें। अपने शब्दों में कह सकें।
* संबंधित अंशों के कारण बता सकें।
* पद्य, गीत धाराप्रवाह के साथ गा सकें। सारांश अथवा भाव अपने शब्दों में लिख सकें।
* अपठित अंश पढ़कर अर्थग्राह्यता के साथ उत्तर दे सकें।
* पाठ्यांश के आधार पर दिये गये प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से दे सकें।
* सूचित अंश का शीर्षक दे सकें। अलग-अलग अंशों में क्रमिकता बता सकें।

2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

* पाठ्यांश की घटनाओं, अंशों, पात्रों, स्थानों, विषयों के बारे में समझकर अपने शब्दों में लिख सकें।
* अधूरे विषय, कहानी, कविता आगे बढ़ा सकें।
* अलग-अलग घटनाओं में स्वयं को रखकर घटना आगे बढ़ा सकें।
* शब्दों का विविध संदर्भों में सही पद्धति में वाक्य प्रयोग कर सकें।
* पर्याय शब्दों के अर्थ ग्रहण कर दैनिक जीवन में उपयोग कर सकें।
* भाषा खेल, वर्ग पहेली आदि की सहायता से शब्द लिख सकें।
* पद्य या गद्य को एक विधा से दूसरी विधा में बदल सकें।
* निमंत्रण, बधाई पत्र, दीवार पत्रिका आदि तैयार कर सकें।
* चित्र देखकर वर्णन कर सकें।

3. भाषा की बात

* कवि या लेखकों की रचनाओं की प्रशंसा कर सकें।
* प्रेरणा देने वाले किसी भी अंश की लिंग, धर्म, वर्ग भेद रहित प्रशंसा कर सकें।
* भिन्न संस्कृति, संप्रदायों की प्रशंसा कर सकें।
* अव्यय शब्द, विभक्ति पहचान सकें।
* वाक्य भेद पहचान कर वाक्यों के प्रकार समझ सकें व वाच्य भी समझ सकें।
* काल, संधि और समास के बारे में जानकरी प्राप्त कर सकें।

4. परियोजना कार्य

* संग्रहण कर विषय की जानकारी अर्जित कर सकें। विषय का प्रस्तुतीकरण कर सकें।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

विषय सूची

इकाई	क्र. सं.	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ सं.
I.	1.	हम भारतवासी	कविता	1
	2.	ईदगाह	कहानी	6
	उपवाचक	खेल जहाँ, मैदान वहाँ	कहानी	12
II.	3.	बरसते बादल	कविता	16
	4.	कण-कण का अधिकारी	कविता	20
	5.	दक्षिणी गंगा गोदावरी	यात्रा वृत्तांत	24
	उपवाचक	दो कलाकार	कहानी	30
III.	6.	भक्ति पद	कविता	36
	7.	अंधेर नगरी	नाटक	40
	उपवाचक	अपने स्कूल को एक उपहार	कहानी	50
IV.	8.	नीति दोहे	कविता	54
	9.	धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब	साक्षात्कार	58
	10.	जल ही जीवन है	निबंध	66
	उपवाचक	अनोखा उपाय	कहानी	75

इकाइयों का शिक्षण विभाजन इस तरह है

पहली इकाई - जून-जुलाई,
दूसरी इकाई - अगस्त-सितंबर,
तीसरी इकाई - अक्तूबर-नवंबर
चौथी इकाई दिसंबर - जनवरी

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
समन्वयक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं. प्र.

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं. प्र.

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आं. प्र.

श्री मुहम्मद उमर अली
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री मुहम्मद सुलेमान 'आदिल'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री बी. रमेश बाबू
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. सैयद एम. एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री के. शिवराजन
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री एस.मोगलय्या 'सागर'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. शेख अब्दुल ग़नी
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री जयप्रकाश जोसफ
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. मयाना खदीरुल्ला
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती एन. हेमलता
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

चित्रांकन

श्री मोहन राज
जूनियर कॉलेज, वेलुगोंडा

श्री सय्यद हश्मतुल्ला
जी.एच.एस. क़ाज़ीपेट जागीर

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
जेड.पी.एच.एस. कुरमेड, नलगोंडा

श्री कुरेल्ला राघवाचारी
जेड.पी.एच.एस. नकरेकल, नलगोंडा

श्रीमती पार्वती
हिंदू कॉलेज हाई स्कूल, गुंटूर

श्री रामकृष्णा
जेड.पी.एच.एस. पिल्ललामर्री,

ले आउट & डिज़ाइन - श्री कुर्रा सुरेश बाबू

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

1 हम भारतवासी

उन्मुखीकरण

अनेक स्थानों से बहने वाली सभी नदियाँ अंत में समुद्र में ही मिलती हैं। उसी प्रकार अलग-अलग धर्म में जन्म लिये मनुष्य भी परमात्मा के पास पहुँचते हैं। कोई भी धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता। मानव जाति एक है, मानव धर्म एक है। सारी दुनिया एक

प्रश्न

१. नदियाँ किस में विलीन होती हैं?
२. इसमें किस-किस को एक बताया गया है?
३. 'मानव जाति एक है।' इस पर अपने विचार बताइए।

उद्देश्य

छात्रों में देशभक्ति के साथ-साथ विश्वबंधुत्व, विश्वशांति, अहिंसा, त्याग, समर्पण आदि सद्गुणों का विकास करना है। भारत को और भी सशक्त कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अग्रसर करने की प्रेरणा देना है।

विधा

प्रस्तुत कविता देशभक्ति की भावना पर आधारित है। जो बच्चों में सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की भावना जागृत कर, उन्हें विश्वबंधुत्व की ओर क़दम बढ़ाने की प्रेरणा देती है।

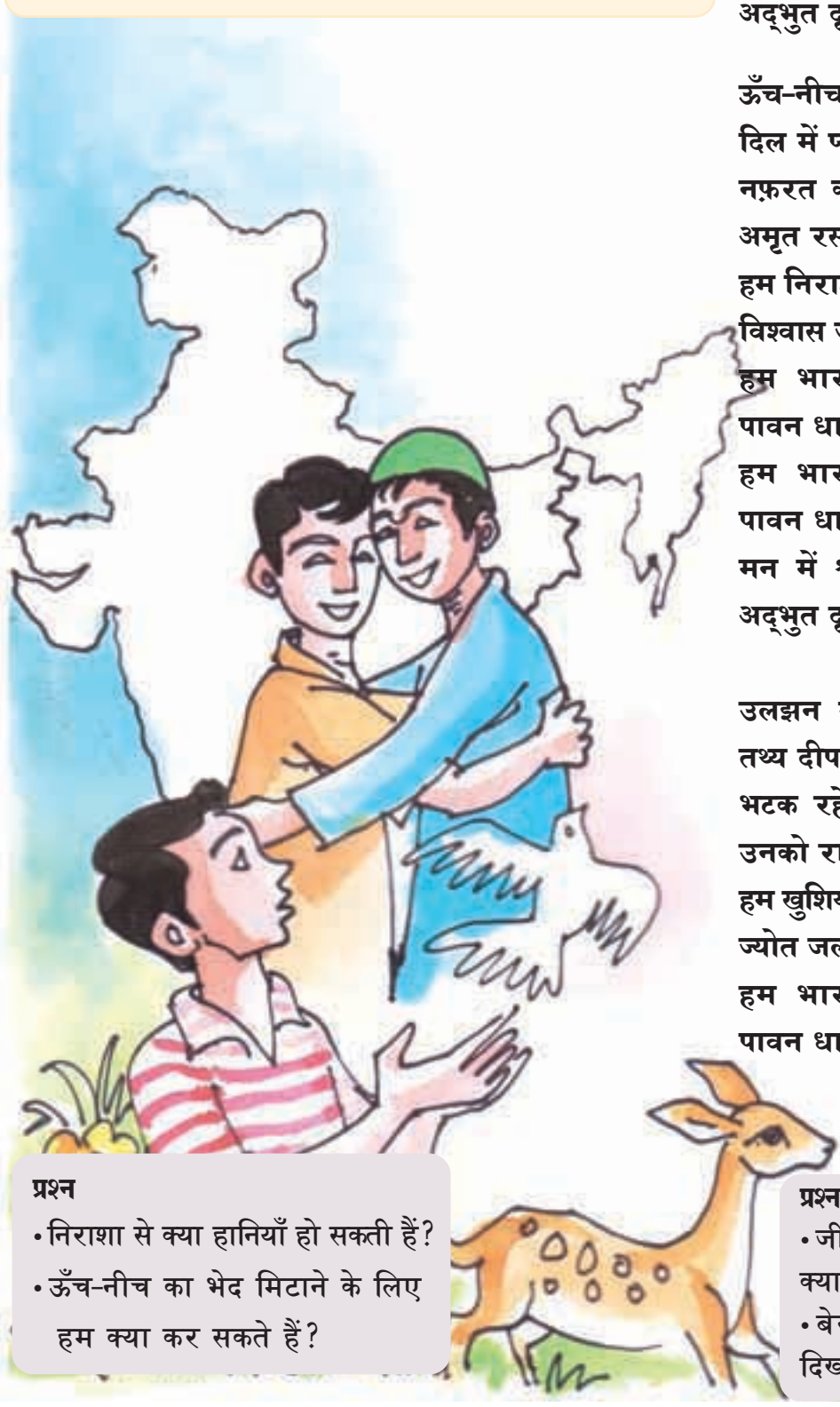
छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिया गया गद्यांश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ पुस्तक के अंतिम पृष्ठ में दिये गये शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो अध्यापक से चर्चा कीजिए।

कवि परिचय

पाठ प्रवेश

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।।



हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।।

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
दिल में प्यार बसायेंगे।
नफ़रत का हम तोड़ कुहासा,
अमृत रस सरसायेंगे।।
हम निराशा दूर भगाकर, फिर
विश्वास जगायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को
पावन धाम बनायेंगे।।
हम भारतवासी दुनिया को
पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्धा और प्रेम का
अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।।

उलझन में उलझे लोगों को,
तथ्य दीप समझायेंगे।
भटक रहे जो जीवन पथ से,
उनको राह दिखायेंगे।।
हम खुशियों के दीप जला, जीवन
ज्योत जलायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को
पावन धाम बनायेंगे।।

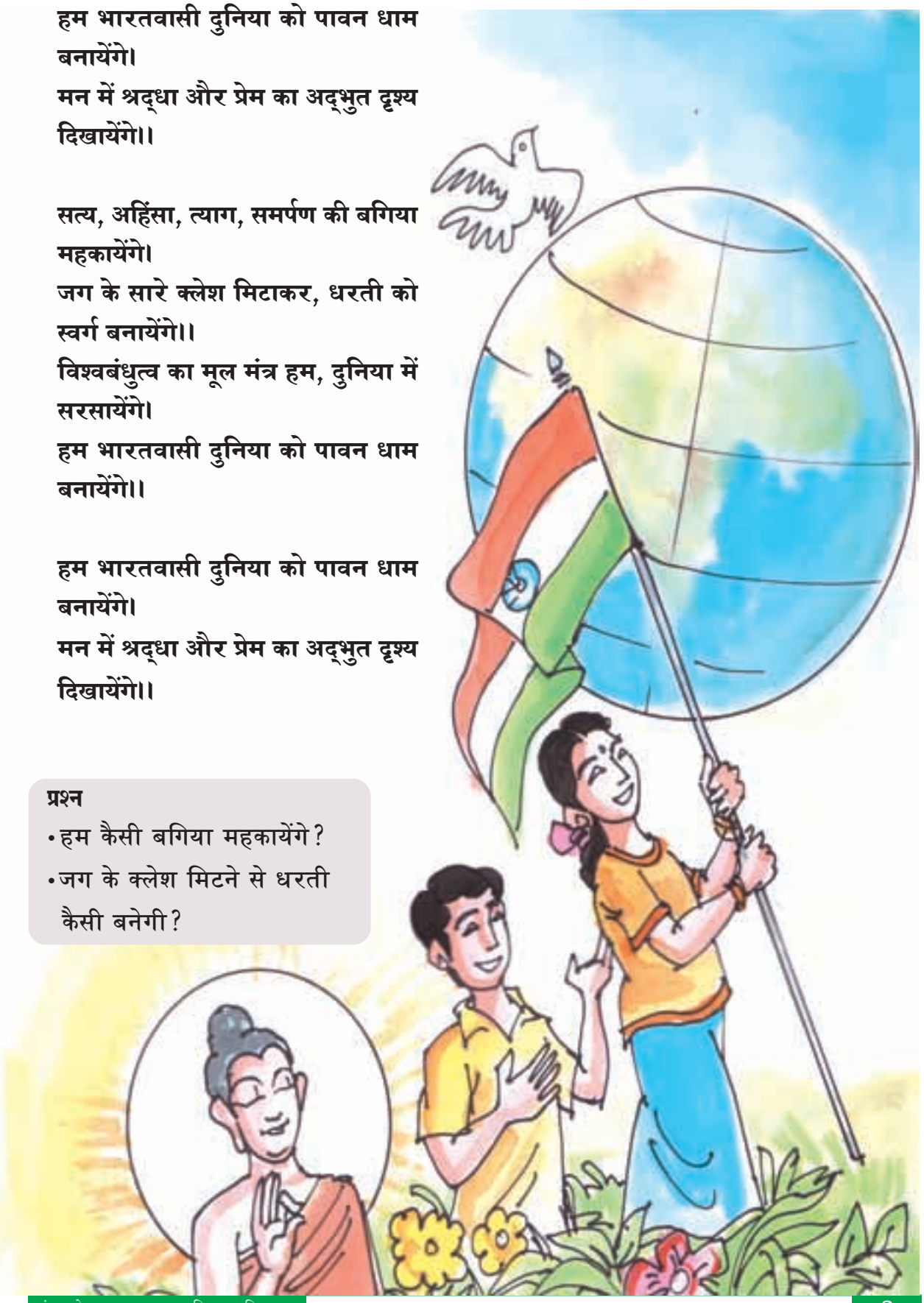
प्रश्न
- निराशा से क्या हानियाँ हो सकती हैं?
- ऊँच-नीच का भेद मिटाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

प्रश्न
- जीवन पथ से भटकने के क्या कारण हो सकते हैं?
- बेराहों को राह कैसे दिखा सकते हैं?

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।।

सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।
जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।।
विश्वबंधुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।।

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।
मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्भुत दृश्य दिखायेंगे।।



प्रश्न

- हम कैसी बगिया महकायेंगे?
- जग के क्लेश मिटने से धरती कैसी बनेगी?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. यह गीत आपको कैसा लगा? अपनी पसंद और नापसंद का कारण बताइए।
2. दुनिया को 'पावन धाम' बनाने के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

(आ) दिया गया पद्यांश पढ़िए। उसके मुख्य बिंदुओं को पहचानिए। लिखिए।

सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।
जग के सारे क्लेश मिटाकर, धरती को स्वर्ग बनायेंगे।।
विश्वबंधुत्व का मूल मंत्र हम, दुनिया में सरसायेंगे।
हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे।।

जैसे : सत्य, ..., ..., ...

(इ) निम्न लिखित भाव से संबंधित गीत की पंक्तियाँ चुनकर लिखिए।

1. संसार में व्याप्त सारे विवादों को मिटाकर, हम धरती को स्वर्ग बनायेंगे।
2. जीवन पथ से भटके लोगों को रास्ता बतायेंगे।
3. हम भेदभाव दूर करेंगे और प्रेम जगायेंगे।

(ई) नीचे दिया गया पद्यांश पढ़कर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

आज़ादी अधिकार सभी का जहाँ बोलते सेनानी,
विश्व शांति के गीत सुनाती जहाँ चुनरिया ये धानी,
मेघ साँवले बरसाते हैं, जहाँ अहिंसा का पानी,
अपनी माँगें पोंछ डालती, हँसते-हँसते कल्याणी,
ऐसी भारत माँ के बेटे मान गँवाना क्या जानें,
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें।

१. धानी रंग की चुनरी कौन-सा गीत सुना रही है?
अ) अधिकार का आ) आज़ादी का इ) विश्वशांति का ई) अहिंसा का

२. भारत माँ के बेटे कैसे हैं?
अ) सजीले आ) साँवले इ) हठीले ई) निराले

३. सैनिक किसे सभी का अधिकार मानते हैं?
अ) आज़ादी को आ) शांति को इ) अहिंसा को ई) मान को

४. 'मान' शब्द का विलोमार्थक है-
अ) निरमान आ) दुरमान इ) अपमान ई) स्वमान

६. इस पद्यांश का उचित शीर्षक यह हो सकता है-
अ) मेरा देश आ) देश के लाल इ) आज़ादी ई) अहिंसा

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर ३-४ पंक्तियों में लिखिए।

१. उलझनों से बचे रहने के लिए हमें कौनसी सावधानियाँ लेनी चाहिए?

२. जीवन-पथ से भटके लोगों को हम कैसे राह दिखा सकते हैं?

३. निराशावादी और आशावादी मनुष्य के स्वभाव में क्या अंतर होता है?

४. विश्वबंधुत्व की भावना को मूलमंत्र क्यों माना गया होगा?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर ६-८ पंक्तियों में लिखिए।

१. गीत में 'धरती को स्वर्ग' बनाने की बात कही गयी है। हम इसमें किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं?

२. इस गीत का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. विश्वशांति की राह में समर्पित किसी महान व्यक्ति का साक्षात्कार लेने के लिए एक प्रश्नावली तैयार कीजिए।

(ई) प्रशंसा

1. सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

भाषा की बात

(अ) इन वाक्यों में आये विलोमार्थी शब्दों को रेखांकित कीजिए और उनसे एक-एक वाक्य बनाइए।

१. हम निराशा दूरकर आशा जगायेंगे। २. हम हिंसा त्यागकर अहिंसा की राह अपनायेंगे।

(आ) इन वाक्यों का वचन बदलकर लिखिए।

१. हम दुनिया को पावन धाम बनायेंगे। २. हम खुशियों से जीवन ज्योत जलायेंगे।

(इ) इन शब्दों का विग्रह कर समास पहचानिए।

१. भारतवासी २. जीवनज्योति

(ई) रेखांकित शब्दों से वाक्य बनाइए।

१. मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्‌भुत दृश्य दिखायेंगे।

२. उलझन में उलझे लोगों को, तथ्य दीप समझायेंगे।

३. सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण की बगिया महकायेंगे।

परियोजना कार्य

भाषा क्रियाकलाप

अपना मनपसंद देशभक्ति गीत कक्षा में सुनाइए।

2 ईदगाह

उन्मुखीकरण

पथिकों की जलती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया।
खुशबू भरे फूल देते हैं,
हमको नव फूलों की माला,
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम भी तो कुछ जीना सीखें।

प्रश्न

१.
२. पथिकों को जलती दुपहर में सुख व आराम पहुँचाने वाले कौन हैं?
३. 'हम भी तो कुछ देना सीखें' - कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

उद्देश्य

आधुनिक समाज में मानव जहाँ हर क्षेत्र में उन्नति कर रहा है वहीं दूसरी ओर दिन प्रतिदिन उसके नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। परिवार के सदस्य स्वयं अपने घर के बड़े-बुजुर्गों के हित की नहीं सोचते। प्रस्तुत पाठ से छात्रों में त्याग, सद्भाव व विवेक जैसे संवेदनशील और कर्त्तव्य बोध संबंधी गुणों का विकास करना है।

विधा विशेष

मुंशी प्रेमचंद आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार हैं। इन्होंने लगभग ३०० कहानियाँ लिखी हैं। इनकी कहानियों में हमें भारत के ग्रामीण जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये गद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

लेखक परिचय

प्रेमचंद का जन्म एक गरीब घराने में काशी में ३१ जुलाई, १८८० को हुआ। उनके पिता डाक-मुंशी थे। सात साल की उम्र में पिता और चौदह साल की उम्र में माता का देहांत हो गया। इनके बचपन का नाम धनपत राय था। वे ट्यूशन पढ़ाते हुए मैट्रिक तथा नौकरी करते हुए एफ.ए. और बी.ए. पास किये। सन् १९२१ में गोरखपुर के डिप्यूटी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल थे। जब गाँधी जी ने सरकारी नौकरी से इस्तीफे का बिगुल बजाया तो प्रेमचंद ने भी इस्तीफा दिया। उन्होंने एक दर्जन उपन्यास और ढाई सौ कहानियों की रचनाएँ की। आपको कथा सम्राट व उपन्यास सम्राट कहा जाता था। आपकी कहानियाँ मानसरोवर शीर्षक से आठ खंडों में संकलित है। आपकी रचनाएँ हैं- गोदान, गबन, प्रेमाश्रम, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा और मंगलसूत्र आदि आपके उपन्यास हैं। इनके अतिरिक्त पंचपरमेश्वर, बड़े घर की बेटी, पूस की रात, कफ़न आदि इनकी कहानियाँ हैं।

नैतिक मूल्यों के विकास और बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति आदर भावना को विकसित कर हमारी संस्कृति को पुनःस्थापित कर सकते हैं। तो ऐसे ही मूल्यों पर आधारित कहानी 'ईदगाह' हम पढ़ेंगे।

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात! वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है! मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं।

लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। बार-बार जेब से खज़ाना निकालकर गिनते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत चीज़ें लाएँगे- खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या। और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह भोली सूरत का चार-पाँच साल का दुबला-पतला लड़का था। उसका पिता गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली पड़ती गयी और एक दिन मर गयी। किसी को पता न चला क्या बीमारी थी।

अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोदी में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपये कमाने गये हैं। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बहुत-सी अच्छी चीज़ें लाने गयी हैं। इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज़ है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है। फिर भी वह प्रसन्न है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन है और उसके घर में दाना तक नहीं है। लेकिन हामिद! उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की किरण। हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है- ''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिलकुल न डरना।



अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने पिता के साथ जा रहे हैं। हामिद का अमीना के सिवा कौन है? भीड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा? तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी दूर चलकर, उसे गोदी ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवइयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते लौटते-लौटते सारी सामग्री जमा करके झटपट बना लेती। यहाँ तो चीज़ें जमा करते-करते घंटों लगेंगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद जा रहा था। शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। बड़ी-बड़ी इमारतें - अदालत, कॉलेज, क्लब, घर आदि दिखायी देने लगे। ईदगाह जानेवालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक-से-एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। सहसा ईदगाह नज़र आया। लाखों सिर एक साथ सजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। नमाज़ खत्म हो गयी। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। हामिद दूर खड़ा है। उसके पास केवल तीन पैसे हैं। मोहसिन भिश्ती खरीदता है, महमूद सिपाही, नूरे वकील, और सम्मी धोबन। हामिद खिलौनों को ललचाई आँखों से देखता है। वह अपने आपको समझाता है, ''मिट्टी के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ।'' फिर मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ लीं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा। मोहसिन कहता है, ''हामिद, रेवड़ी ले ले, कितनी खुशबूदार हैं।'' हामिद ने कहा, ''रखे रहो, क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?''

प्रश्न

१. लेखक ने ईद के दिन जिस प्रकार प्रकृति चित्रण किया। उसे अपने शब्दों में लिखो।
२. हामिद गरीब है फिर भी वह अन्य लड़कों से ईद के दिन अधिक प्रसन्न है, क्यों?
३. 'हामिद के अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की किरण' ऐसा लेखक ने क्यों कहा?

सम्मी बोला, ''तीन ही पैसे तो हैं, तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?''

मिठाइयों के बाद लोहे की चीज़ों की दुकानें आती हैं। कई चिमटे रखे हुए थे। हामिद को ख्याल आता है, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। दादी अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी- ''मेरा बच्चा! अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी। हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार



में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। हामिद ने दुकानदार से पूछा, ''यह चिमटा कितने का है?'' छह पैसे कीमत सुनकर हामिद का दिल बैठ गया। हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा, ''तीन पैसे लोगे?'' दुकानदार ने बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक हो और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। दोस्तों ने मज़ाक किया, ''यह चिमटा क्यों लाया पगले! इसे क्या करेगा?''

घर आने पर अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगीं। सहसा हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

''यह चिमटा कहाँ से लाया?''

''मैंने मोल लिया है।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे दिये।''

अमीना ने छाती पीट ली। ''यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुई, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।''

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह मूक स्नेह था, रस और स्वाद से भरा। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्‌भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया। आँचल फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जातीं और आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थीं। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

(मुंशी प्रेमचंद की कहानी के आधार पर)



प्रश्न

१. चिमटा देखने के बाद हामिद के मन में क्या ख्याल आया होगा?

२. हामिद क्यों चिमटा खरीदना चाहता था?

३. अपने लिये खरीदना, अपनों के लिये खरीदना, परायों के लिये खरीदना। इन तीन स्थितियों में आप किसे प्राथमिकता देंगे और क्यों? वर्णन कीजिए।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. 'ईदगाह' कहानी के कहानीकार कौन हैं? वे किस प्रकार के लेखक हैं?
2. बालक प्रायः विभिन्न स्वभाव के होते हैं। कहानी के आधार पर बताइए कि हामिद का स्वभाव कैसा था?

(आ) पाठ के आधार पर हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए।

1. हामिद के पास पचास पैसे थे। ( )
2. अमीना हामिद की मौसी थी। ( )
3. मोहसिन भिश्ती खरीदता है। ( )
4. हामिद खिलौने खरीदता है। ( )

(इ) पाठ पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के सही उत्तर पहचानिए।

1. बुढ़िया का क्रोध तुरंत ..... में बदल गया।

अ) दंड आ) स्नेह इ) प्रेम ई) पीड़ा

2. कीमत सुनकर हामिद का दिल.....गया।

अ) पिघल आ) फिसल इ) बैठ ई) टूट

3. हामिद ..... लाया।

अ) खिलौना आ) मिठाई इ) भिश्ती ई) चिमटा

4. .....अमीना अपनी कोठरी में बैठकर रो रही थी।

अ) अभागिन आ) गरीब इ) बूढ़ी ई) अमीर

5. महमूद के पास ..... पैसे थे

अ) २५ आ) १२ इ) ६ ई) ३

(ई) नीचे दिये गये अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारतीय सभ्यता में माता-पिता, गुरु तथा बड़ों का आदर करना आरंभ से ही सिखाया जाता है। आज के बच्चे माता-पिता, गुरु तथा बड़ों के प्रति आदर का भाव नहीं रख पाते। वे जीवन में मूल्यों से वंचित रह जाते हैं। वे अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। बड़ों के संदेश हमें मानव मूल्य प्रदान करते हैं। अध्यापक हमारे जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार दूर कर हमें जीवन संग्राम के लिए तैयार करते हैं।

1. बड़ों का आदर न करने से क्या होता है?
2. माता-पिता से हमें क्या मिलता है?
3. अध्यापक हमारे लिए क्या करते हैं?
4. इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

1. हामिद के स्थान पर आप होते तो क्या खरीदते और क्यों?
2. आप भी कभी घूमने गये होंगे? उस समय आप किस-किसके लिए क्या-क्या लेकर आये?
3. जब आपका कोई पसंदीदा खिलौना टूट जाता है या गुम हो जाता है तो आप कैसा अनुभव करते हैं?क्यों?

(आ) इस पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखो।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

हामिद और उसके मित्रों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

(ई) प्रशंसा

अमीना दादी के प्रति हामिद ने जो प्रेम दर्शाया है, उसकी प्रशंसा करते हुए अपने विचार बताइए।

भाषा की बात

(अ) निम्न लिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

सुहावना, हरियाली, शीतल, लालिमा, अजीब

(आ) निम्न लिखित वाक्य भूतकाल में बदलकर लिखिए।

अमीना का दिल कचोट रहा है।

तीन ही पैसे तो हैं।

मैंने मोल लिया है।

(इ)

(ई)

परियोजना कार्य

(अ) भारत में कई धार्मिक वर्ग अपने धार्मिक संप्रदाय के अनुसार त्यौहार मनाते हैं। इन त्यौहारों के बारे में पता कीजिए और उनकी सूची बनाइए।

उपवाचक

खेल जहाँ, मैदान वहाँ

-ज्ञान चतुर्वेदी

मेरे घर के सामने एक छोटा-सा ऊबड़-खाबड़ मैदाननुमा भूमि का टुकड़ा है, जहाँ प्रतिदिन एक सनसनी खोज टेस्ट मैच हो जाता है। स्कूल के बच्चों की बस आठ बजे आती है। बच्चे सात बजे से ही आकर इस स्थानीय 'ओवल' मैदान में इकट्ठे हो जाते हैं। यह मैदान पचास-साठ फ़ीट चौड़ा और इतना ही लंबा है।

सात-आठ बस्ते, एक के ऊपर एक रखकर विकेट बना लिया जाता है। ऐसा चौड़ा और ऊँचा विकेट रिकार्ड बुक में दर्ज होना चाहिए। ऐसी भीमकाय विकेट होने पर भी यहाँ किसी को क्लीन बोल्ड से आउट करना कठिन है क्योंकि बॉल बस्ते से टकराई या नहीं, इस पर बच्चे कभी एकमत नहीं होते। खूब झूमाझटकी के बाद कोई मान जाए तो बात अलग है। कैच आउट मानना पड़ता है। वैसे उसमें भी कई बार इस बात पर लड़ाई होती है कि बॉल बहुत तेज़ करी थी और ऐसी तेज़ बॉलिंग करना कहाँ की इनसानियत है। अभी हमारी बारी आने दो तो बताएँगे। फिर न कहना।

सबसे पहले दो टीमों का चयन होता है। बच्चे अधिक हैं, इसलिए यह करना पड़ता है। जो दादा टाइप के बच्चे हैं, उम्र में कुछ बड़े हैं तथा काठी से मज़बूत हैं, वे चयन करते हैं। इस दौरान दूसरों को चूँ-चपाड़ की हिम्मत नहीं पड़ती।

चयन करने वाले पहले अपने यार-दोस्तों को लेते हैं। फिर पड़ोसियों को और फिर एक-दो अच्छा खेलनेवालों को भी। वे स्वयं तो टीम में आते ही हैं और इस बात में वे राष्ट्रीय चयनकर्ताओं से दो क़दम आगे हैं। उस बच्चे का स्थान तो खैर टीम में पक्का है ही, जो बल्ला तथा गेंद लाता है। कई बार वह ज़िद करके कप्तान तक बन जाता है। बात नहीं मानी तो वह अगले दिन बैट नहीं लाएगा। सब देखना पड़ता है चयनकर्ताओं को। इस चक्कर में कुछ अच्छा खेलनेवाले बच्चे बाहर रह जाते हैं।

ये बाहर रह जानेवाले हल्ला करते हैं, कंकड़ मारते हैं और बार-बार चिल्लाते हैं कि चलो, चलो, बस आ गई। उनमें से एकाध को अंपायर बना दिया जाता है जो गुस्से में किसी को भी आउट दे देता है। यदि आउट करने के लिए बहुत हुल्लड़ मचा, तो वह अपना बल्ला वापस ले लेता है। तब अंपायर अपना ही निर्णय रद्द कर देता है।

मैदान के उत्तरी छोर पर कुछ शेड़नुमा गैराज़ बने हैं, जिनकी छत पर अगर बॉल चली गई तो

खेल न केवल बहुत देर तक बंद रहता है, बल्कि उस बल्लेबाज़ की हैसियत, उम्र तथा स्वास्थ्य के हिसाब से पिटाई तक की जा सकती है। गैराज़ में सीढ़ियाँ नहीं हैं, सो छत से गेंद उतारना कठिन तथा कलापूर्ण है। यह हर बच्चे के बस की बात नहीं। जो चढ़कर निकाल लाता है, उसे अतिरिक्त चार रन मिलते हैं और जिस बल्लेबाज़ ने मारकर फेंकी, वह आउट माना जाता है।

मैदान के दक्षिणी छोर पर मकान है, जहाँ मैं कमेंटेटर की मुद्रा में प्रतिदिन बैठता हूँ। पूर्वी छोर पर एक बाग़ है, जिसमें चली जाने पर गेंद प्रायः खो जाती है और जिस खिलाड़ी की गलती से गेंद खोई, वह टीम पराजित मानी जाती है।

इसी मैदान में यहाँ-वहाँ कुत्ते, बकरियाँ, गाएँ और भैंसे बैठी-लेटी या टहलती रहती हैं। जब किसी बच्चे से कैच गिर जाता है या गेंद हाथ से निकल जाती है, तो वह इन चौपायों पर दोष डाल देता है।

'यह बकरी बीच में आ गई, वरना देखता!'

इस मैदान पर बाधाओं के अलावा बहुत से गड्ढे भी हैं। ज़मीन के इतने से टुकड़े पर इतने सारे गड्ढे मैंने कहीं नहीं देखे। इनके अलावा मैदान पर है थोड़ी-सी घास, सूखा-गीला कीचड़, पत्थरों के छोटे-बड़े टुकड़े, बजरी के ढेर, चिन्हें बस स्टेंड बनाने के लिए वर्षों पहले डाला गया था।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में बच्चे रोज़ सुबह सात से आठ बजे तक मैच खेलते हैं और बहुत बढ़िया खेलते हैं। सब जानते हैं भारतीय क्रिकेट विपरीत परिस्थितियों में ही चमकती है।

किरमिच की रबरनुमा टप्पेदार गेंद से जितनी खतरनाक गेंदबाज़ी कर सकते हैं, की जाती है। पहले क्रिकेट की असली कार्क की बॉल से खेलते थे, परंतु पिछले महीने ही, खतरनाक पथरीले पिच से उतारकर वह गेंद सीधे पीछे की तरफ़ गई, जहाँ एक सज्जन झोला लेकर मैदान में थर्ड मैन के आसपास से निकलकर बस पकड़ने के लिए लपके जा रहे थे। वे झोले के साथ ही गिर पड़े। गेंद सिर पर लगी थी। सारे बच्चे बस्ते लेकर भाग गए और अगले दिन भी उधर नहीं फटके। स्कूल बस भी खाली गई।

बाद में धीरे-धीरे सब कुछ फिर पूर्ववत शुरू हो गया, परंतु तय किया गया कि किरमिच की गेंद से खेलेंगे। वे सज्जन अभी भी दूसरा झोला लेकर इसी मैदान से निकलते हैं। पहलेवाला झोला किसी ने उस दिन मार लिया, जब वे बेहोश होकर गिर गए थे। बच्चों को उन्होंने माफ़ कर दिया था।

खिलाड़ियों का चयन होने और दो टीमें बनने में ही रोज़ाना सवा सात बज जाते हैं। आठ बजे स्कूल-बस आ जानी है। पैंतालीस मिनट शेष बचते हैं और दोनों टीमों को बैटिंग करनी होती है। दोनों की एक-एक पारी होनी है। कैसे होगा? पर हो जाता है। पैंतालीस मिनट में ही छक्के से लेकर

रन-आउट तक सब कुछ संपन्न हो जाता है। अपने आपको कपिलदेव माननेवाला बॉलर, लंबे रन-अप की गुंजाइश छोटे से मैदान में न होने के कारण दूर सड़क से दौड़कर आता है और बॉल अनाप-सनाप फेंक देता है। गेंद पिच के गड्ढों से टकराकर, आप री आप लेगब्रेक, बंपर, गुगली, आउटस्विंगर इत्यादि कुछ भी हो सकती है, परंतु क्रेडिट बॉलर को पूरा मिलता है।

''क्या बॉल काटी यार, मान गए।''

''कितने विकेट लिए तूने?''

''मैंने तो आज सात विकेट लिए''

बच्चे पैंतालीस मिनट में सात विकेट निकाल रहे हैं और माँ-बाप हैं कि

''कहाँ से फ़ाड़ लाए यह पैंट? कल से खेले तो खबरदार! टाँगे तोड़ दूँगा!''

पर बच्चे निरुत्साहित नहीं होते। वे सारा रिस्क लेकर भी लगे रहते हैं।

बॉलिंग यानी गेंदबाज़ी चल रही है। खतरनाक। मैदान में यहाँ-वहाँ हॉल, कपिल, मार्शल और एंडी रॉबर्ट्स बिखरे पड़े हैं। टीम का हर बच्चा गेंद करना चाहता है। लड़ते हैं सब।

''अब मैं करूँगा।''

''अरे! अभी पाँच ही बॉल तो हुई हैं।''

''उल्लू मत बना। आठ कर चुका।''

''जा-जा.....''

लड़ते हैं आपस में। फिर तय होता है कि सभी को एक-एक ओवर मिलेगा और जल्दी गेंद करनी होगी। लंबा रन-अप नहीं चलेगा क्योंकि बस आनेवाली है। सब बॉलिंग करते हैं। सभी किरमिच की घिसी-पिटी बॉल को स्कूल की सफ़ेद पैंट पर रगड़ते हैं। सबकी गेंदबाज़ी सफल तथा तेज़ है। पिच के गड्ढे, पत्थर, उतार-चढ़ाववाली सतह सब की बराबर मदद करते हैं। सनसनीपूर्ण गेंदबाज़ी चलती रहती है।

इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि बैटिंग झोल खा रहे हैं। नहीं, कभी नहीं। बल्लेबाज़ों के तेवर तो देखते ही बनते हैं। उनमें हर बच्चा अपने को गावस्कर या कपिल समझे बैठा है। घुमाकर मारो, यहाँ बल्लेबाज़ी का यही सिद्धांत है। कैसी भी गेंद आए या परिस्थिति हो, मारो घुमा के। यह सिद्धांत सफल भी हो जाता है। जिसका बल्ला गेंद से लग गया, चौके से कम नहीं जाती गेंद। चार क़दम पर ही तो चौके की सीमा रेखा है। सारे बच्चे चौका लगा लेते हैं। किरमिच की गेंद उछलती बहुत है, सो छक्के भी सभी लगा डालते हैं। मिनटों में स्कोर पचास-सौ पहुँचता है।

''आज मैंने तीस बनाए।''

''मैंने भी।''

''और मैंने भी।''

सभी खूब बनाते हैं, परंतु पारी बीस मिनट में समाप्त।

फिर दूसरे आते हैं। वे भी बनाते हैं। एक बच्चा स्कोर याद रखता जाता है। मौखिक स्कोर बोर्ड पर किसी को भरोसा नहीं इसलिए हर बच्चा अपना स्कोर खुद भी याद करता जाता है। इसी चक्कर में सब घालमेल हो जाता है। बाद में सभी झगड़ते हैं कि असली स्कोर क्या रहा। कोई नहीं मानता कि कौन जीता। दोनों टीमें जीत का दावा करती हैं। झगड़ा होता है। सभी शामिल होते हैं इसमें। वे भी जो खेल नहीं रहे थे। हंगामा हो जाता है और सब एक-दूसरे को कहते हैं कि-''देख लेंगे बेटा। हमेशा बेईमानी करते हो तुम।''

''हाँ करते हैं। कर ले क्या करेगा? धाँस किसी और को देना।''

तभी बस आ जाती है।

सारे बच्चे, जो लड़ रहे थे, हँसते-खेलते, हो-हल्ला करते, अपने-अपने बस्ते विकेट से निकालकर बस की तरफ़ बेतहाशा भागते हैं। उस दिन का टेस्ट मैच बिना किसी शिकवे के समाप्त होता है।

चली जाती है बस।

प्रश्न :

1. 'खेल मनोरंजन का साधन है।' अपने विचार बताइए।
2. खेल में कैसी भावनाएँ होनी चाहिए?
3. खेलते समय कैसी सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

3 बरसते बादल

उन्मुखीकरण

क्या गाती हो, किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी।
प्यासी धरती देख माँगती,
हो क्या मेघों से पानी?

प्रश्न

१. मीठे गीत कौन गाती है?
२. हमारे जीवन में पानी की आवश्यकता क्यों है?
३. मेघ हमें पानी किस प्रकार देते हैं?

उद्देश्य

बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना, सौंदर्यबोध कराना इस कविता का उद्देश्य है। बच्चों में कल्याण तथा परोपकार की भावना जागृत करना ही इस कविता का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

'बरसते बादल' कविता पाठ है। कविता पाठक की भावनाओं को उदात्त बनाने के साथ-साथ उनके सौंदर्यबोध को भी सजाती संवारती है। विद्यार्थियों के किशोर मन को कविता विशेष रूप से प्रभावित करती है क्योंकि किशोर मन सरल जिज्ञासु और रागात्मक होता है। कविता किशोरों में संवेदनशीलता का विकास करती है। इसी प्रकार की 'सुमित्रानंदन पंत जी' द्वारा रचित नाद (ध्वनि) प्रकृति सौंदर्य की कविता 'बरसते बादल' यहाँ प्रस्तुत की गयी है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये पद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

कवि परिचय

कवि का नाम : श्री सुमित्रानंदन पंत
जीवनकाल - १९००-१९७७
प्रसिद्ध रचना - चिदंबरा, लोकायतन, पल्लव, ग्राम्या, वीणा, ग्रंथि आदि।
पुरस्कार - पद्म भूषण, ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार।
विशेष - वे छायावाद के प्रमुख कवि हैं। इन्हें प्रकृति वर्णन में बेजोड़ कवि मानते हैं।

पाठ प्रवेश : *वर्षा ऋतु हमेशा से सबकी प्रिय ऋतु रही है। वर्षा के समय प्रकृति की सुंदरता देखने लायक होती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है। इसीलिए सभी लोग वर्षा का बेसब्री से इंतजार करते हैं।*



झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।
चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के।।

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,
'म्यव-म्यव' रे मोर 'पीउ' 'पीउ' चातक के गण।
उड़ते सोनबालक, आर्द-सुख से कर क्रंदन,
घुमड़-घुमड़ गिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अंतर।
धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर,
रज के कण-कण में तृण-तृण को पुलकावलि थर।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।
इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन,
फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।।

प्रश्न

१. वर्षा की बूँदों का क्या महत्व है? क्या ये बूँदें हमेशा एक सी होती हैं? क्यों?
२. प्रकृति की कौन-कौनसी चीज़ें मन को छू लेती हैं?
३. तृण-तृण की प्रसन्नता का क्या भाव है?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. धरती की शोभा का प्रमुख कारण वर्षा है। इस पर अपने विचार बताइए।
2. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. वर्षा ऋतु में नदियों के सौंदर्य पर अपने विचार बताइए।

(आ) वाक्य सीधा कर के लिखिए।

१. हैं झम-झम बरसते झम-झम मेघ के सावन।

२. गगन में गर्जन घुमड़-घुमड़ गिर भरते मेघ।

३. धरती पर झरती धाराएँ पर धाराओं।

(इ) नीचे दिये गये भाव की पंक्तियाँ लिखिए।

१. बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा है।

२. मिट्टी के कण-कण से कोमल अंकुर फूट रहे हैं।

३. कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार-बार आये और सब मिलकर झूलों में झूलें।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बादल और बूँदें, बंद किये हैं बादल ने
अंबर के दरवाजे सारे, नहीं नजर आता है सूरज ना कहीं चाँद-सितारे?
ऐसा मौसम देखकर, चिड़ियों ने भी पंख पसारे,
हो प्रसन्न धरती के वासी, नभ की ओर निहारे।।

१. इसमें अंबर के दरवाज़े बंद कर दिये हैं-

अ) आकाश आ) सूरज इ) चाँद, ई) बादल

२. पंख किसने पसारे हैं?

१. चिड़िया २. मौसम ३. धरती ४. सितारे

३. पद्यांश में आया युग्म शब्द है-

अ) बादल-अंबर आ) सूरज-चाँद इ) चाँद-सितारे ई) धरती-वासी

४. धरती के लोग किस ओर निहार रहे हैं?

अ) चिड़िया आ) नभ इ) बादल ई) चाँद

५. पहले पढ़ी गयी कविता व उपर्युक्त कविता का विषय है-

अ) प्रकृति आ) सूरज इ) तारे ई) अंबर

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

१. वर्षा के समय सबकी अनुभूति अलग-अलग होती है। बताइए इनकी अनुभूति होती होगी?

२. वर्षा के समय प्रकृति बहुत ही सुंदर दिखायी पड़ती है। इस समय मेघ, बिजली और बूँद की क्या विशेषता होती है?

३. वर्षा की बूँदें धरती का रूप बदल सकती हैं। कैसे?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

१. प्रायः सभी लोग सावन का बार-बार आना पसंद करते हैं। क्यों?

३. कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

मेघ की आत्मकथा लिखिए।

(ई) प्रशंसा

मेघों से बरसने वाली वर्षा की बूँदों से क्या लाभ हैं?

भाषा की बात

(अ) इन शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

सावन, सपना

(आ) इन शब्दों के तद्भव रूप लिखिए।

गण, वारि

(इ) रेखांकित शब्दों के बीच का अंतर समझिए।

१. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर।

२. इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन।

(ई) ञ ञ

परियोजना कार्य

नीचे हिंदी महीनों के नाम दिये गये हैं। पता कीजिए कि किस महीने में किस तरह का मौसम होता है। उनके बारे में दो-दो वाक्य लिखिए।

हिंदी महीनों के नाम :

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, सावन, भाद्रपद, अश्विनी, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

4 कण-कण का अधिकारी

उन्मुखीकरण

सूत कातते थे गाँधीजी, कपड़ा बुनते थे।
चुनते थे अनाज के कंकर, चक्की पिसते थे।
आश्रम के अनाज पाने, आश्रम में पिसते थे।
ऐसा था उनका आश्रम, गाँधीजी के लेखे, पूजा के समान था श्रम।

प्रश्न

1. गाँधीजी क्या-क्या करते थे?
2. गाँधीजी के अनुसार पूजनीय क्या है?
3. हमारे जीवन में श्रम का क्या महत्व है?

उद्देश्य

इस कविता के द्वारा छात्रों में समाज कल्याण व उदारता की भावना का विकास करना है। श्रम का महत्व बताकर उन्हें मेहनत करने के लिए प्रेरित करना है।

विधा विशेष

हर कविता की अपनी-अपनी विशेषता होती है। इसकी विशेषता ओजपूर्ण व प्रेरणादायक भाषा है। इसके कवि डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना 'कुरुक्षेत्र' से यह कविता ली गयी है।

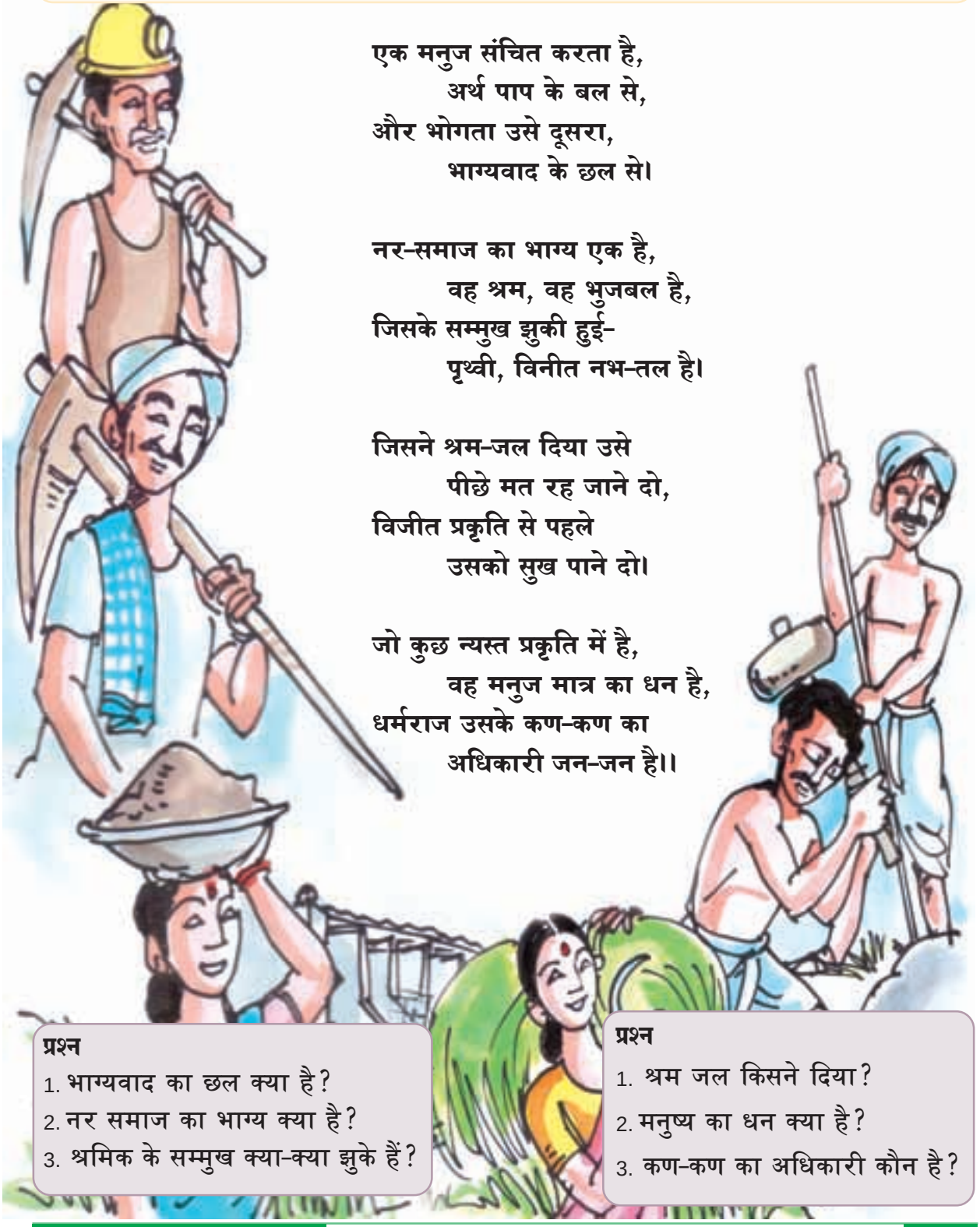
छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये पद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

कवि परिचय

– डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'

पाठ प्रवेश : मेहनत ही सफलता की कुँजी है। मेहनत करने वाला व्यक्ति कभी नहीं हारता। वह हमेशा सफल होता है। सारा संसार उसे आदर भाव से देखता है। इसी प्रकार श्रम व श्रम करने वालों को महत्व देने वाली कविता 'कण-कण का अधिकारी' यहाँ दी जा रही है।



एक मनुज संचित करता है,
अर्थ पाप के बल से,
और भोगता उसे दूसरा,
भाग्यवाद के छल से।

नर-समाज का भाग्य एक है,
वह श्रम, वह भुजबल है,
जिसके सम्मुख झुकी हुई-
पृथ्वी, विनीत नभ-तल है।

जिसने श्रम-जल दिया उसे
पीछे मत रह जाने दो,
विजीत प्रकृति से पहले
उसको सुख पाने दो।

जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है,
वह मनुज मात्र का धन है,
धर्मराज उसके कण-कण का
अधिकारी जन-जन है।।

प्रश्न
1. भाग्यवाद का छल क्या है?
2. नर समाज का भाग्य क्या है?
3. श्रमिक के सम्मुख क्या-क्या झुके हैं?

प्रश्न
1. श्रम जल किसने दिया?
2. मनुष्य का धन क्या है?
3. कण-कण का अधिकारी कौन है?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. भाग्य और कर्म में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं? क्यों?
2. श्रम के बल पर हम क्या-क्या हासिल कर सकते हैं?
3. मनुष्य को परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वभाव में परिवर्तन कर लेना चाहिए या नहीं? क्यों?

(आ) पाठ पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. इस कविता के कवि कौन हैं?
2. कविता का यह अंश किस काव्य से लिया गया है?
3. कविता में किसको संबोधित किया गया है?
4. पृथ्वी किसके सम्मुख झुक जाती है?
5. सबसे पहले सुख पाने का अधिकार किसे है?
6. प्रकृति के कण-कण का अधिकारी कौन है?

(इ) निम्न लिखित भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ चुनकर लिखिए।

1. धरती और आकाश इसके सामने नतमस्तक होते हैं।
2. प्रकृति से पहले परिश्रम करने वाले को स्थान मिलना चाहिए।

(ई) नीचे दिया गया पद्यांश पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कदम-कदम बढ़ाए जा, सफलता तू पाये जा,
ये भाग्य है तुम्हारा, तू कर्म से बनाये जा,
निगाहें रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं ये सफर,
ये जन्म है तुम्हारा, तू सार्थक बनाये जा।

1. कवि के अनुसार सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?
2. हमारा सफर कब सरल बन सकता है?
3. भाग्य को बनाने के लिए हमें क्या करना होगा?
4. हमारा जन्म कब सार्थक बन सकता है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर ३-४ पंक्तियों में लिखिए।

1. श्रम करने वाले व्यक्ति के आगे सभी झुक जाते हैं? क्यों?
2. कवि मेहनत करने वालों को सदा आगे रखने की बात क्यों कर रहे हैं?
3. अनुचित तरीके से धन अर्जित करने वाला व्यक्ति सही है या श्रम करने वाला? अपने विचार बताइए।

आ) इस कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

1. कविता में समान अधिकारों की बात की गयी है। 'समानता' से संबंधित कुछ नारे लिखिए।

(ई) प्रशंसा

1. परिश्रम का हमारे जीवन में बहुत महत्व होता है। इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

भाषा की बात

अ) रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्द शब्दकोश में ढूँढ़िए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

एक मनुज संचित करता है, अर्थ पाप के बल से।
नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है।
जिसके सम्मुख झुकी हुई, पृथ्वी, विनीत नभ-तल है।

आ) पर्यायवाची शब्दों का उचित मेल कीजिए।

अर्थ	मनुष्य, मानव
मनुज	सलिल, वारि
छल	धन, पैसा
जल	तिनका, दाना
नभ	धोखा, कपट
कण	अंबर, आकाश

इ) 'जन-जन' 'कण-कण' इन पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग कविता में हुआ है। आप ऐसे ही कुछ अन्य शब्द लिखिए।

ई) कविता में आये मिश्रित वाक्य पहचानिए। उनमें से दो वाक्य यहाँ लिखिए।

परियोजना कार्य

'दिनकर' जी की कुछ अन्य कविताएँ पढ़िए और किसी एक कविता को चार्ट पर लिखकर कक्षा में चिपकाइए।

उपवाचक

दो कलाकार

– मन्नू भंडारी

''ए रूनी, उठ।'' और चादर खींचकर चित्रा ने सोती होती हुई अरुणा को झकझोर कर उठा दिया।

''अरे, क्या है?'' आँखें मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गयी और अपने नये बनाये हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़े कर के बोली, ''देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।''

ओह, तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी।

''अरे, ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गयी पहला इनाम तो नाम बदल देना।''

चित्र को देखकर चारों ओर घुमाते हुए अरुणा बोली, ''किधर से देखूँ, यह तो बता दे? हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनाये, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफहमी न हुआ करे, वरना तू बनाये हाथी ही और समझें उल्लू।'' तस्वीर पर आँखें गड़ाते हुई बोली, ''किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ आखिर यह किस जीव की तस्वीर है।''

''तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।''

''अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्रैम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?'' यह कहकर अरुणा ने चित्र रख दिया।

''ज़रा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है।''

''तेरी बेवकूफी का। आयी है, बड़ी प्रतीक वाली।''

''अरे जनाब, यह चित्र तो आज की दुनिया में 'कन्फ्यूजन' का प्रतीक है, समझी।''

''मुझे तो तेरी दिमाग की कन्फ्यूजन का प्रतीक आ रहा है, बिना मतलब जिंदगी खराब कर रही है।'' और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गयी। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाजे पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोली, '' बच्चो, चलो, मैं अभी आयी।''

''क्या यह बंदर पाल रखी है?'' फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, ''एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक मित्र साहिबा थीं जो बस्ती के चौकीदारों, नौकरों, चपरासियों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पंडिताइन और समाज-सेविका समझती थीं।''

चार बजते ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आयीं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

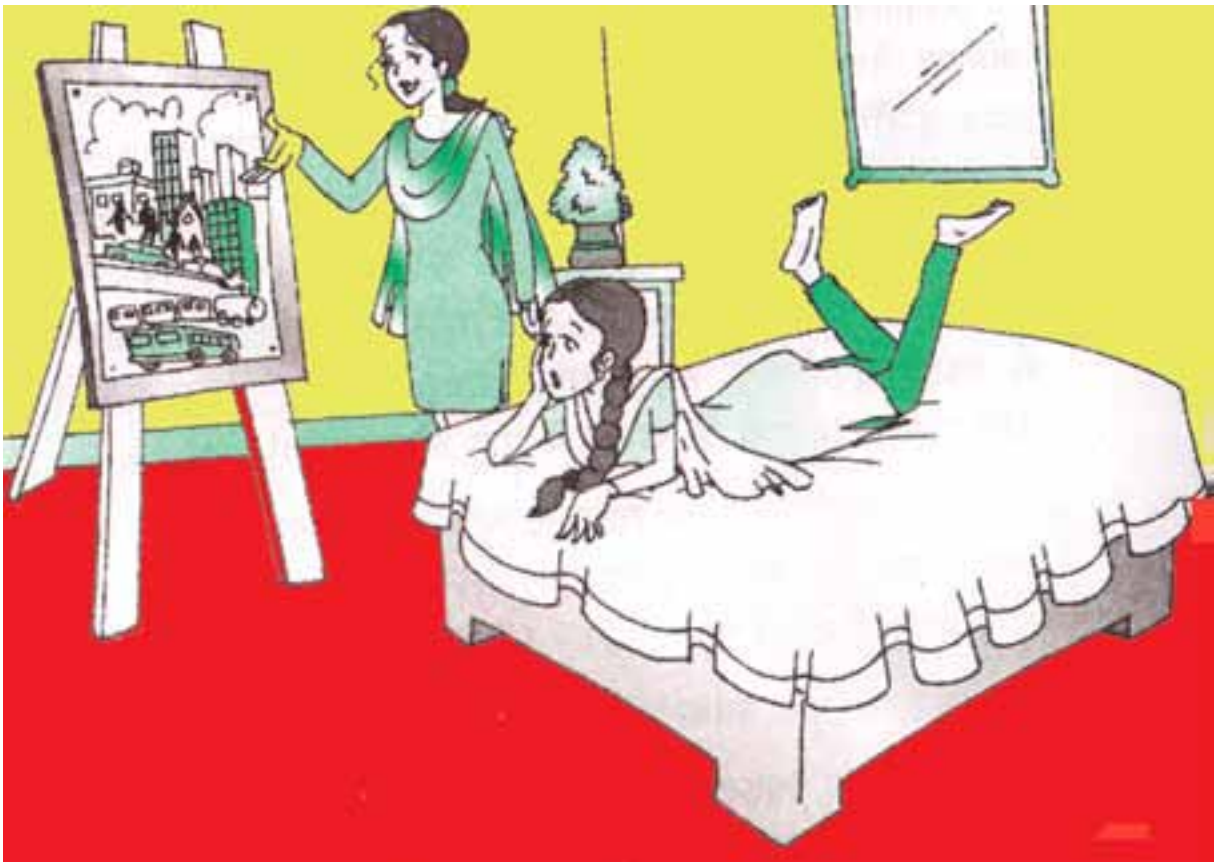
''पता नहीं, कहाँ-कहाँ भटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहो।''

''अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है? ले, मैं आ गयी। चल, बना चाय। मिलकर ही पियेंगे।''

''ये ले कोई चिट्ठी आयी है।''

अरुणा लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चाय पीते-पीते चित्रा बोली, ''पिताजी का पत्र आया है, लिखा है, जैसे ही यहाँ कोर्स समाप्त हो जाये, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी कि, पिताजी कभी मना नहीं करेंगे।''

''हाँ भाई। धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी। तेरी इच्छा कभी खाली जा सकती है? पर सच कहती हूँ मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता



नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।'' अरुणा आवेश से बोली।

''तो तुम मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?''

''तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं। बस चौबीस घंटे अपने रंगों और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में कितनी बड़ी घटना घट जाये पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती। हर घड़ी, हर जगह, हर चीज़ में तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है। कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की जगह दो-चार की जिंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।''

''वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।'' और चित्रा हँस पड़ी।

तीन दिनों से मूसलदार वर्षा हो रही थी। रोज़ अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़ पीढ़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती थी। अरुणा सारा दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह दिया, तेरे इंतहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती है नहीं, सारा दिन बस भटकती रहती है। माता-पिता क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।''

''आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है, मैं भी उसके साथ जा रही हूँ।'' चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गयी। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफी ख़राब हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आयी कि मानो छह महीनों से बीमार है। चित्रा उस समय ''गुरुदेव'' के पास गयी हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी। तभी उसकी नज़र चित्रा के नये चित्रों की ओर गयी। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे जो दृश्य अपनी आँखों से देखकर आ रही थी वैसे ही दृश्य यहाँ पर अंकित थे। उसका मन न जाने कैसा-कैसा हो गया।

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। ''क्यों चित्रा, तेरा जाने का तय हो गया?''

''हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।'' उल्लास उसके स्वर में से छलका पड़ रहा था।

''सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा, छह साल से साथ रहते-रहते यह बात मैं तो भूल गयी कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?'' उदासी भरे स्वर

में अरुणा ने पूछा। लगा जैसे स्वयंसेवी पूछ रही हो।

कितना स्नेह था दोनों में ''सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की दृष्टि से देखता था।

आज चित्रा को जाना था। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आयी। बस गुरुजी से मिलना रह गया था। सो उनका आशीर्वाद लेने चल पड़ी। तीन बज गये थे, पर वह लौटी नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली थी। अरुणा ने सोचा कि वह खुद जाकर देख आये कि आखिर बात क्या हो गयी। तभी हड़बड़ाती सी चित्रा ने प्रवेश किया। ''बड़ी देर हो गयी न। अरे क्या करूँ कि बस कुछ ऐसा हो गया, कि रुकना ही पड़ा।''

''आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनो तो।'' दो-तीन कंठ एक साथ बोले, ''गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर भिखारिन रहा करती थीं न, लौटी तो देखा कि वह वही मरी पड़ी और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे थे। जाने क्या था पूरे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक रफ सा स्केच बना ही डाला। बस इसी में देर हो गयी।''

साढ़े चार बजे चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गयी, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन तक भी गयीं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थी,। पाँच भी बज गये, रेल चल पड़ी पर अरुणा न आयी, सो न आयी।



विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गयी। उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गयी। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबार के कालम के कालम भर गये। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गयी। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला। फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता चकित रह जाता। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया।

उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गयी। 'रूनी' कहकर चित्रा भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गयी।

''तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी?''

''चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आयी थी। तू तो एकदम भूल ही गयी।''

''अरे, ये बच्चे किसके हैं?'' दो प्यारे से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी। तो लड़की की उम्र कोई आठ।

''मेरे बच्चे हैं, और किसके। यह तुम्हारी चित्रा मौसी हैं, नमस्ते करो, अपनी मौसी को।'' अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़े आदर से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी बच्चों को कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। तभी अरुणा ने टोका।'' कैसी मौसी है, प्यार तो कर।'' और चित्रा ने दोनों पर हाथ फेरा प्यार से। अरुणा ने कहा, ''तुम्हारी यह मौसी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हैं, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनायी हुई है।''

''आप हमें सब तस्वीरें दिखाइए मौसी,''बच्चों ने फरमाइश की। चित्रा उन्हें तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, ''यही वह तस्वीर है रूनी,जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।''

''ये बच्चे रो क्यों रहे हैं मौसी'' तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने पूछा।

''उनकी माँ मर गयी है। देखती नहीं, मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती।'' बालक ने

मौका पाते ही अपने बड़प्पन और ज्ञान की छाप लगायी।

''ये सचमुच के बच्चे थे, मौसी?'' बालिका का स्वर करुण से करुणतर होता जा रहा था।

''अरे, सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनायी थी यह तस्वीर।''

''मौसी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की।''

उन तस्वीरों को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। साधारण बातचीत के पश्चात अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, ''आप ज़रा बच्चों को प्रदर्शिनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।''

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, ''सच-सच बता रूनी, ये प्यारे-प्यारे बच्चे किनके हैं?''

''कहा तो, मेरे।'' अरुणा ने हँसते हुए कहा।

''अरे बता न, मुझे ही बेवकूफ बनाने चली है।'' एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, ''बता दूँ?'' और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, ''यही वह दोनों बच्चे हैं।''

''क्या.....'' चित्रा की आँखें विस्मय से फैली रह गयीं?

''क्या सोच रही चित्रा?''

कुछ नहीं..... मैं..... सोच रही थी कि.....। पर शब्द शायद उसके विचारों में खो गये।.....

प्रश्न :

1. अरुणा व चित्रा दोनों के स्वभाव के बारे में अपने विचार बताइए।
2. चित्रा ने विदेश जाकर क्या किया? आप के विचार में उसका विदेश जाना सही था? क्यों?
3. अरुणा की ममता पर अपने विचार बताइए।

5 दक्षिणी गंगा गोदावरी

उन्मुखीकरण

कल-कल करतीं नदियाँ सारी,
छम-छम करतीं बूँदें प्यारी।
सर-सर करतीं हवा ये न्यारी,
जन-जन होवें यूँ बलिहारी।।

प्रश्न

१. यहाँ पर किसके बारे में बताया गया है?
२. दक्षिण भारत की कुछ नदियों के नाम बताइए।
३. नदियों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। इस पर अपने विचार बताइए।

उद्देश्य

यात्रा-वृत्तांत की विशेषताओं के बारे में बताते हुए दक्षिण भारत की प्रमुख और विशाल नदी गोदावरी के प्राकृतिक सौंदर्य और महत्व के बारे में बताना है।

विधा विशेष

यात्रा-वृत्तांत यह गद्य की एक प्रमुख विधा है। यात्रा-वृत्तांत पाठ में लेखक किसी दर्शनीय स्थल से संबंधित अपनी यात्रा की अनुभूतियों को रोचक और ज्ञानवर्धक ढंग से प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत पाठ 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' भी श्री काका कालेलकर द्वारा रचित यात्रा-वृत्तांत पाठ है जो उनकी रचना 'सप्त सरिता' से लिया गया है। इसमें लेखक ने गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये गद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

लेखक परिचय

गोदावरी नदी धीर-गंभीर माता और पूर्वजों की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। इसके जल में अमोघ शक्ति है। इसके तट पर अनके शूरवीरों, तत्व-ज्ञानियों, साधु-संतों, राजनीतिज्ञों और ईश्वर भक्तों ने जन्म लिया है। ऐसी पावन और पवित्र गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का जो वर्णन काका कालेलकर के द्वारा हुआ है, चलिए इसके बारे में हम जानेंगे।

प्रश्न

१. सूर्योदय के समय प्रकृति का वातावरण कैसा दिखायी देता है?

२. आपने कभी नौका में सफ़र किया होगा। उस समय के अपने अनुभव को बताइए।

३. पहाड़ी पर छाये बादलों की आकृति ऋषि मुनियों जैसी लग रही थी। आपको बादलों के आकार से किन-किन आकृतियों का आभास होता है?

४. लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा कि राजमहेंद्री के आगे गोदावरी की शान शौकत निराली है?

५. नदियों में पानी कहाँ से आता होगा?

प्रश्न

१. विपत्तियों या संकट के समय हमें किस प्रकार कार्य करना चाहिए? क्यों?

२. लेखक ने भँवरों को बच्चों की उपमा क्यों दी होगी?

३. गोदावरी नदी के बीच अनेक टापू है। टापुओं की क्या विशेषताएँ हो सकती हैं?

४. लोग गोदावरी के जल का कलश भरकर क्यों ले जाते होंगे?

५. लेखक ने रेल के पहिये की आवाज़ को 'संक्रामक' कहा है। 'संक्रामक' शब्द से लेखक का क्या आशय होगा?

१. किसी मेले या उत्सव के समय नदियों के किनारे आपको क्या-क्या दिखायी पड़ता है?

२. गोदावरी को धीर-गंभीर माता की संज्ञा क्यों दी गयी होगी?

३. जल की एक-एक बूँद हमारे लिए महत्वपूर्ण क्यों है?

४. नदियों से हमें क्या-क्या लाभ होते हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

१. मौका मिलने पर आप किस क्षेत्र की यात्रा करना पसंद करेंगे और क्यों?

२. लेखक की जगह तुम होते, तो गोदावरी नदी का वर्णन कैसे करते? बताइए।

(आ) पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए।

१. लेखक को कोव्वूरु स्टेशन पार करने के बाद गोदावरी मैया के दर्शन हुए। ( )

२. गोदावरी की शान-शौकत कुछ निराली है। ( )

३. उपासक गंगा जल के आधे कलश को गोदावरी में उँडेलते हैं। ( )

४. राजमहेंद्री और धवलेश्वर का सुखी जन-समाज दुखित था। ( )

(इ) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

आचार्य विनोबा भावे का जन्म महाराष्ट्र में हुआ। वे प्रातःकाल बहुत जल्दी उठते थे। प्रतिदिन नियमित रूप से चरखा चलाते थे। बातें कम और काम अधिक करते थे। भूदान आंदोलन विनोबाजी का प्रमुख कार्य था। विनोबाजी युवावस्था में ही जनता की सेवा का व्रत लिया था। उनके मन पर गाँधीजी के विचारों को प्रभाव पड़ा। बनारस की सभा में गाँधीजी ने कहा था, ''जब तक देश परतंत्र है, तब तक देश गरीब है, ठाट-बाट से रहना पाप है। जब तक देश की जनता दुखी है, आराम से रहना अपराध है।''

१. विनोबाजी के जीवन का प्रमुख कार्य क्या था?

२. बनारस की सभा में गाँधीजी ने क्या कहा?

३. गाँधीजी के अनुसार आराम से रहना क्यों अपराध है?

४. 'बातें कम, काम अधिक' इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

५. गाँधीजी के और कुछ नारे बताइए।

(ई) इस अवतरण के मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

पुल पर से गुज़रते समय दाएँ देखें या बाएँ, हम उसी अधेड़-बुन में थे। पुल आ गया और भागमती गोदावरी का अत्यंत विशाल पाट दिखायी पड़ा। बेजवाड़े में कृष्णा माता के दर्शन पर मैं गर्व करता रहूँगा। गोदावरी की शान शौकत कुछ निराली है।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

१. किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने अनुभवों को प्रस्तुत कीजिए।

२. गोदावरी को दक्षिणी गंगा कहने से आप सहमत हैं या नहीं, अपने विचार व्यक्त कीजिए।

३. आंध्र को अन्नपूर्णा एवं भारत का धान्यागार कहलाने में नदियों का योगदान व्यक्त कीजिए।

(आ) निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

१. चेन्नई से राजमहेंद्री जाते समय लेखक के मन में उत्पन्न हुई भावनाओं को अपने शब्दों में लिखिए।

२. गोदावरी पुष्कर से संबंधित जानकारी प्रस्तुत कीजिए।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आप अपने साथियों के साथ शैक्षणिक यात्रा पर निकलते हैं तो आपको किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उनका विवरण सविस्तार प्रस्तुत कीजिए।

(ई) प्रशंसा

केदारनाथ एवं चारधाम की यात्रा में फँसे हुए भाई-बहनों को खान-पान एवं रहने की सुविधा देने वाले सज्जनों की प्रशंसा अपने शब्दों में कीजिए।

भाषा की बात

(अ) निम्न लिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय पहचानकर लिखिए।

जैसे : निराहारी : उपसर्ग - निर् प्रत्यय- ई

अप्रसन्नता, स्वतंत्रता, बेईमानदार, अज्ञानी, निर्गुणी

(आ) पाठ में युग्म शब्दों की भरमार है। जैसे : जहाँ-तहाँ, रंग-बिरंग, कहीं-कहीं, ठंडी-ठंडी, ठाट-बाट, दूर-दूर, धौले-धौले, लंबे-चौड़े, क्षण-क्षण, नया-नया, ऊँचे-ऊँचे, साधु-संत आदि। इन युग्म शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(इ)

(ई)

परियोजना कार्य

कुछ महापुरुषों के नीति संबंधी अनमोल वचन संकलित कीजिए। उनके भाव भी लिखिए।

6 भक्ति पद

उन्मुखीकरण

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

प्रश्न

१. भगवत भक्ति का ज्ञान कौन देता है?
२. गुरु को किससे श्रेष्ठ बताया गया है? क्यों?
३. आपके विचार में गुरु का क्या महत्व है?
४. गुरु के अतिरिक्त आपके जीवन में किनका स्थान महत्वपूर्ण है? क्यों।

उद्देश्य

छात्रों को प्राचीन साहित्य से अवगत कराते हुए उनमें काव्य रचना की विविध शैलियों के ज्ञान का विकास करना है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न करना है।

विधा विशेष

यह चौपाई और पद से संबंधित है। चौपाई एक मात्रिक सम छंद है। यहाँ रैदास की भक्ति संबंधी चौपाई प्रस्तुत की गयी है। पद रागात्मक शैली में गाये जा सकते हैं। रैदास की शिष्या मीरा के भक्ति संबंधी पद प्रसिद्ध हैं। यहाँ उन्हीं में से एक पद दिया गया है।

चौपाई और पद विशेष लय और ताल से गाये जाते हैं। जो बच्चों के रागात्मक मन को छू लेते हैं। चौपाई छंद चार पंक्तियों का होता है, इसकी प्रत्येक पंक्ति में १६ मात्राएँ होती हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये गद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

पाठ प्रवेश : *प्राचीन काल से ही भगवत-स्मरण, भगवत-भक्ति को महत्व दिया गया है। भगवान के नाम रूपी नाव से ही संसार रूपी संसार से तर सकते हैं। इसकी सही राह का मार्गदर्शन गुरु द्वारा होता है।*

ऐसी ही भक्ति संबंधी रैदास की चौपाइयाँ और मीराबाई के पद हम इस पाठ के अंतर्गत पढ़ेंगे।

कवि : **रैदास**
जीवनकाल : १४८२ - १५२७
प्रसिद्ध रचना : 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इनके पद संकलित हैं।
विशेष : ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवियों में से एक।



प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी।
जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभुजी, तुम घन-बन हम मोरा।
जैसे चितवहि चंद्र चकोरा।।
प्रभुजी, तुम मोती हम धागा।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा।।
प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

प्रश्न
१. चंदन और पानी, बादल और मोर का क्या संबंध होता है?
२. चकोर पक्षी चंद्र को क्यों निहारता है?



कवयित्री : **मीराबाई**
जीवनकाल : १४९८ - १५७२
प्रसिद्ध रचना : मीराबाई पदावली
विशेष : कृष्णोपासक कवयित्रियों में श्रेष्ठ। माधुर्य भाव प्रयोग में पटु।

पायो जी म्हें तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।
जनम-जनम की पूँजी पायी, जग में सभी खोवायो।
खरच न खूटै, चोर न लूटै, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख-हरख जस गायो।।

प्रश्न
१. संसार में राम नाम के अतिरिक्त ऐसी कौनसी वस्तु है जो दिन-ब-दिन बढ़ती जाती है?
२. संत किसे कहते हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

१. मीरा और रैदास दोनों की रचनाएँ गेय हैं। ये रचनाएँ भारत के कई घरों में आज भी गायी जाती हैं। इन पदों के आधार पर बताइए कि गीत-संगीत की आवश्यकता हमारे जीवन में क्यों है?

२. हमारे जीवन में भक्ति के महत्व पर चर्चा कीजिए।

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

१. रैदास जी ने भगवान की तुलना किस-किससे की है?

२. मीरा के अनुसार संसार रूपी सागर पार करना कैसे संभव है?

३. राम रतन धन की क्या विशेषता है?

(इ) भाव स्पष्ट कीजिए।

१. संत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आओ।

२. प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मैया मोरि मैं नहिं माखन खायो,
भोर भयो गायन के पाछे मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो साँझ परे घर आयो,
मैं बालक बहिंयन को छोटो छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं बरबस मुख लपटायो,
ये ले अपनी लकुटी कमरिया बहुतहि नाच नचायो।
तब बिहंसी जसोदा, लै उर कंठ लगायो। - महाकवि सूरदास

१. कृष्ण किनसे बातें कर रहे हैं?

अ) यशोदा आ) देवकी इ) सीता ई) पार्वती

२. कृष्ण गायों को चराने कहाँ जाते हैं?

अ) मधुवन आ) शांतिवन इ) राजवन ई) सुंदरवन

३. कृष्ण घर कब लौटते हैं?

अ) सुबह आ) दोपहर इ) शाम ई) रात

४. कृष्ण की बाहें कैसी हैं?

अ) छोटी आ) मोटी इ) चौड़ी ई) लंबी

५. 'बैर' शब्द का अर्थ क्या है?

अ) मित्र आ) मित्रता इ) शत्रु ई) शत्रुता

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

१. रैदास जी ने ईश्वर की तुलना चंदन, बादल और मोती से की है। आप ईश्वर की तुलना किससे करना चाहेंगे? और क्यों?

२. मीरा ने अपने पद में राम नाम की महिमा का अनूठा वर्णन किया है। आप इस बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

३. रैदास और मीरा की भक्ति भावना में क्या अंतर स्पष्ट होता है? अपने शब्दों में लिखिए।

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

१. मीरा के पद का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

२. 'भक्ति' के बारे में रैदास जी के विचारों पर प्रकाश डालिए।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

भक्ति भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सृजन कीजिए।

(ई) प्रशंसा

छात्रों में भक्ति और मानवीय मूल्यों के विकास के लिए मीरा, रैदास या बिहारी जैसे कवियों की रचनाएँ किस प्रकार सहायक हो सकती हैं? बताइए।

भाषा की बात

(अ) पर्यायवाची शब्दों के अनुसार बेमल शब्द पहचानिए।

१. जग, संसार, देश, विश्व　　२. घन, बादल, व्योम, मेघ

३. पूँजी, धन, पूजा, पैसा　　४. पानी, सरिता, सलिल, जल

(आ) मीरा ने 'खरच' शब्द का प्रयोग किया है, जिसका प्रचलित रूप है - 'खर्च'। इसी प्रकार के कुछ अन्य शब्द पाठ में से चुनिए और उनका प्रचलित रूप लिखिए।

(इ)

(ई)

परियोजना कार्य

मीराबाई का कोई एक पद संगृहीत कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

7 अंधेर नगरी

उन्मुखीकरण

शासक का यह दायित्व होता है कि सबका बराबर ध्यान रखना चाहिए। विपत्ति की हालत में धैर्य और समय स्फूर्ति से काम लेना चाहिए। क़ानून और नियमों का समान रूप से अनुसरण करना चाहिए। जो शासक अधिकार में क्षमा का गुण रखता है, निस्संदेह वह आदर्श शासक कहलाता है।

प्रश्न

१. शासक को विपत्ति की हालत में कैसे काम लेना चाहिए?
२. आपकी नज़र में आदर्श शासक के लक्षण क्या हो सकते हैं?
३. मानव जीवन में हमें किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

उद्देश्य

बातचीत करना भी एक कला है। किसी भी संदर्भ में बात करने के लिए सोचना और समझना बहुत जरूरी है। कठिन आपत्तियों के समय, समय स्फूर्ति से कैसे मुक्त होना है, इसे जागृत करना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

यह प्रहसन (हास्य-व्यंग्य) विधा में लिखा गया प्रसिद्ध नाटक है। इस पाठ में यह बताने का प्रयास किया गया है कि महंत के शिष्य गोवर्धनदास किस तरह लालच में आकर फँस जाता है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये गद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

कवि परिचय

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म ९ सितंबर १८५० में काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। भारतेंदु के पिता का नाम गोपाल चंद था। वे भी कवि थे। वे गिरिधर उपनाम से कविता लिखते थे। पैंतीस वर्ष की आयु में सन् १८८५ में उनकी मृत्यु हुई। दस वर्ष की उम्र में उनके पिता की मृत्यु हुई। और ५ वर्ष की उम्र में माता की मृत्यु। वे माता-पिता के सुख से वंचित हो गये। बचपन का सुख नहीं मिला। वे मूलतः अच्छे नाटककार थे। रचनाएँ : वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चंद्र, चंद्रावली, भारत दुर्दशा, भारत जननी, अंधेर नगरी आदि।

यदि हम सूझ-बूझ से काम लेंगे तो बड़ी से बड़ी विपत्ति का सामना भी आसानी से कर सकते हैं। इस भावना पर आधारित प्रहसन नाटक 'अंधेर नगरी' यहाँ प्रस्तुत है।

—पात्र—

महंत, नारायणदास, गोवर्धनदास, घासीराम, हलवाई, शिष्य, राजा, फ़रियादी, कल्लू, कारीगर, चूने वाला, भिश्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, सिपाही।

अंक एक

दृश्य एक

स्थानः शहर से बाहर एक सड़क।

(महंतजी और दो शिष्य बात कर रहे हैं।)

महंत : बेटा नारायणदास! दूर से तो यह शहर बहुत अच्छा दिखायी पड़ रहा है। जाकर भिक्षा लाओ, तब तो भगवान का भोग लग सकेगा।

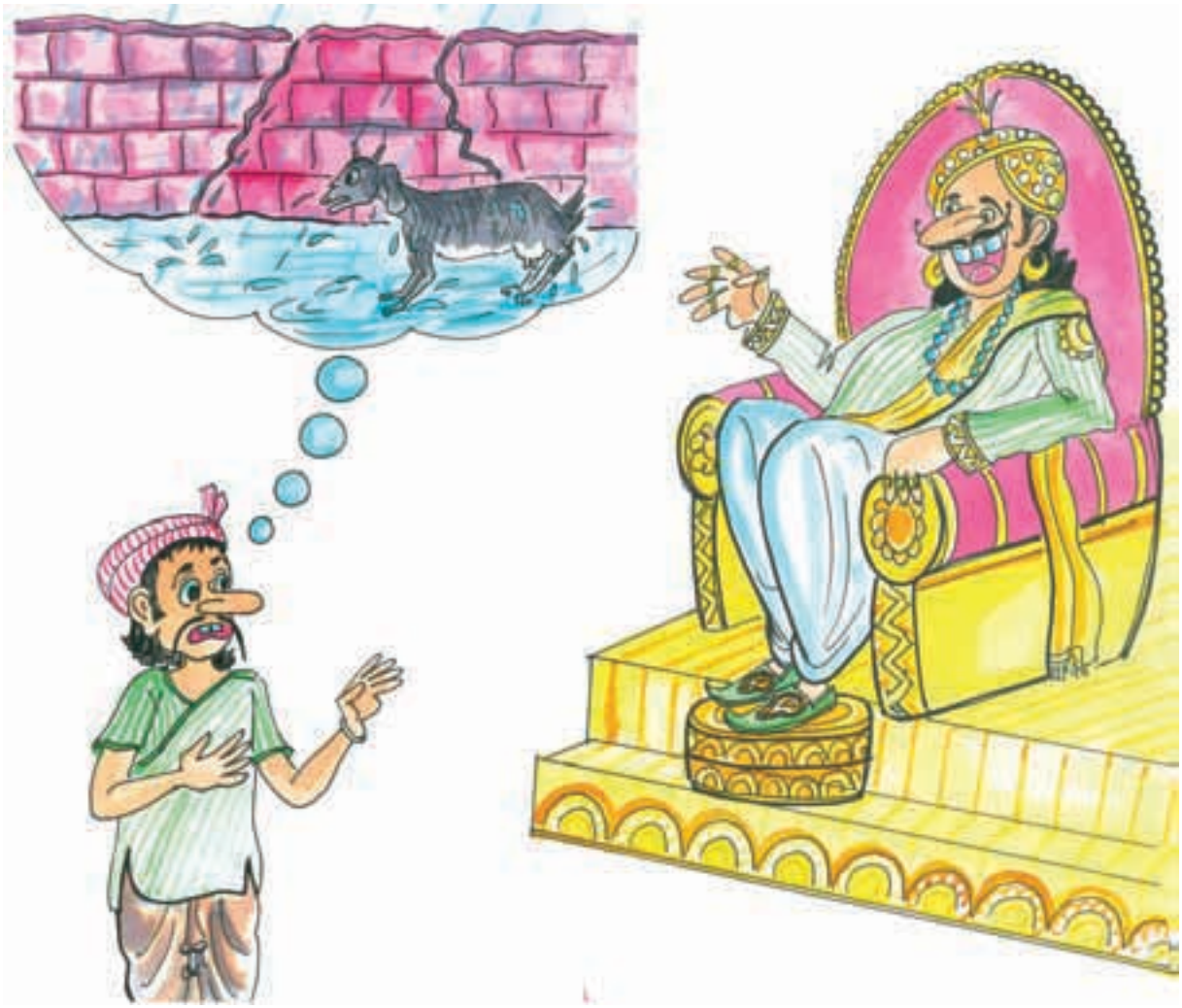
नारायणदासः गुरुजी! नगर तो बहुत सुंदर है, पर जब भिक्षा भी सुंदर मिल जाए तभी आनंद आएगा।

महंत : बेटा गोवर्धनदास! तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।

दृश्य दो

(नगरी के बाज़ार का दृश्य)





घासीरामः चना ज़ोर गरम
चना बनावै घासीराम
चना चुरमुर-चुरमुर बोलै
बाबू खाने को मुँह खोलै
बोलै अच्छा बना चबैना।

(महंत का चेला गोवर्धनदास आता है और बेचनेवालों की आवाज़ सुन-सुनकर खाने के आनंद में बड़ा प्रसन्न होता है।)

गोवर्धनदास : सेठ जी! आटा कितने सेर।

सेठ : टके सेर।

गोवर्धनदास : और चावल?

सेठ : टके सेर।

गोवर्धनदास : और चीनी?

प्रश्न

- गोवर्धनदास का निर्णय कैसा लगा? और क्यों?
- महंत अंधेर नगरी में रहना उचित नहीं समझते थे? क्यों?
- राजा कैसा होना चाहिए और क्यों?
- गुरु-शिष्य के बीच कैसे संबंध होने चाहिए और क्यों?

सेठ : टके सेर।

गोवर्धनदास : और घी?

सेठ : टके सेर।

गोवर्धनदास : सब टके सेर! सचमुच!

सेठ : हाँ महाराज, क्यों झूठ बोलूँगा।

गोवर्धनदास : क्यों बच्चा! इस नगरी का नाम क्या है?

सेठ : अंधेर नगरी।

गोवर्धनदास : और राजा का नाम?

सेठ : चौपट राजा।

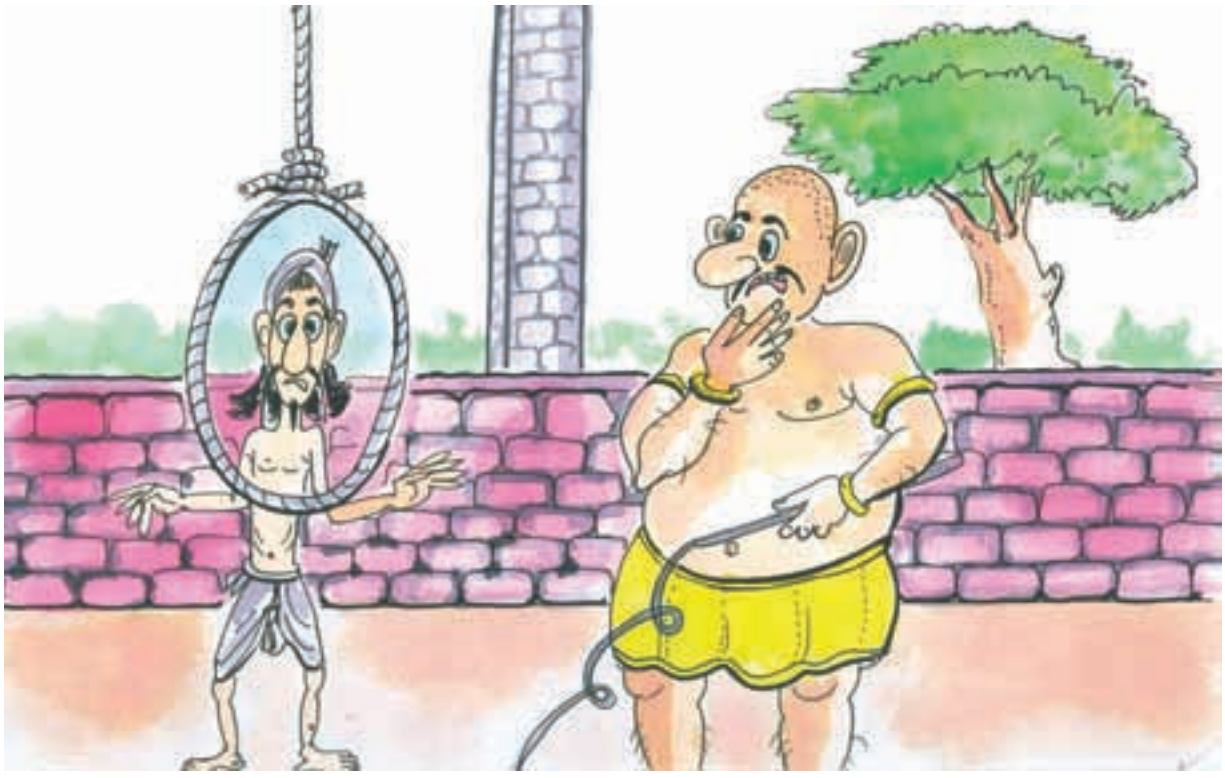
गोवर्धनदास : (गाते हुए) अंधेर नगरी, चौपट राजा।
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।।

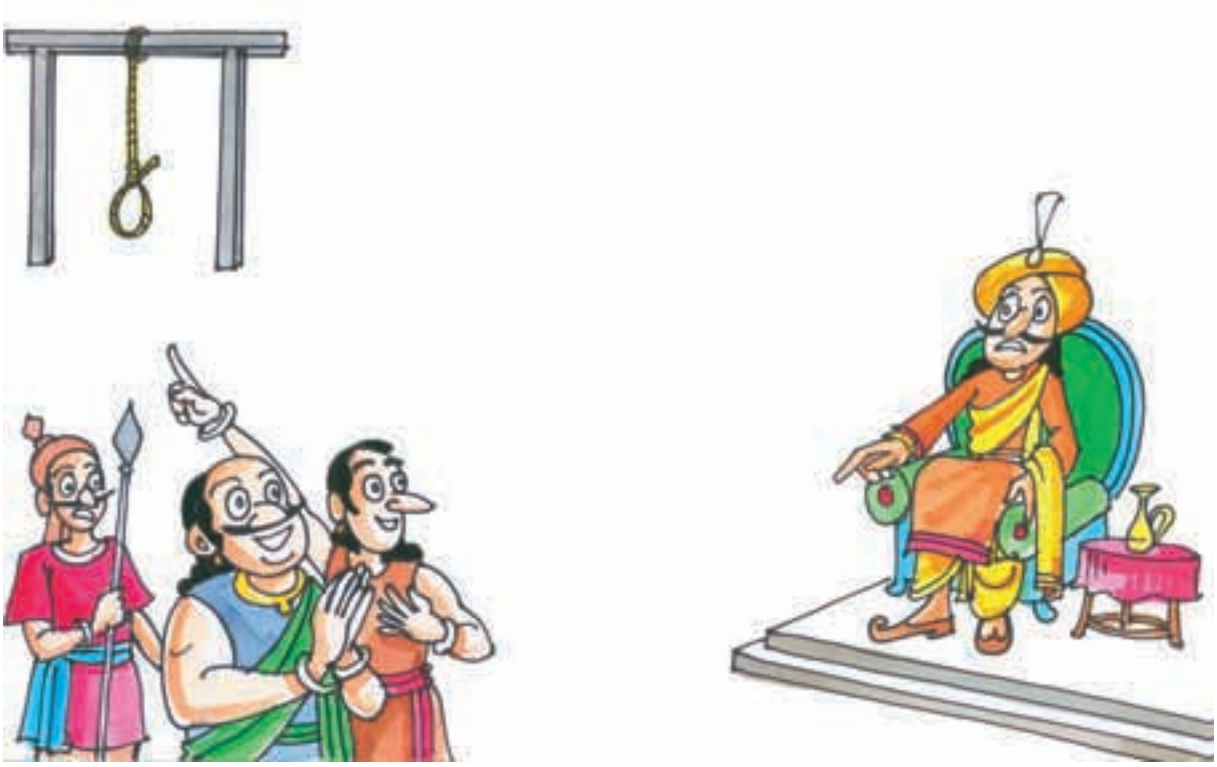
(गोवर्धनदास एक ओर से 'चौपट राजा' गीत गाते हुए आता है।)

महंत : बच्चा! यह कौनसी नगरी है और इसका कौन राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर ही खाजा है?

गोवर्धनदास : अंधेर नगरी, चौपट राजा।
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।।

महंत : तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर ही





खाजा हो। तो बच्चा, चलो यहाँ से। ऐसी अंधेर नगरी में हज़ार मन मिठाई मुफ्त की मिलै, किस काम की? यहाँ एक क्षण नहीं रहना।

गोवर्धनदास : गुरुजी ऐसा तो संसार-भर में कोई देश नहीं है। दो पैसे पास रहने से ही पेट भरता है। मैं तो इस नगरी को छोड़कर नहीं जाऊँगा। मैं तो यहीं रहूँगा। आप भी यहीं रहिए।

महंत : देख बच्चा! पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ। पर इतना कहे देता हूँ कि कभी संकट पड़े तो हमें याद कर लेना।

गोवर्धनदास : प्रणाम गुरुजी! मैं आपको हमेशा याद करूँगा।

(महंतजी नारायणदास के साथ जाते हैं, गोवर्धनदास बैठकर मिठाई खाता है।)

सेठ : हाँ महाराज, क्यों झूठ बोलूँगा।

गोवर्धनदास : क्यों बच्चा! इस नगरी का नाम क्या है?

अंक दो

(राजा, मंत्री और दरबारीगण बैठे हैं। पर्दे के पीछे 'दुहाई है' का शब्द सुनायी देता है। दरबान फ़रियादी को लाते हैं।)

फ़रियादी : दुहाई महाराज! दुहाई।

राजा : बोलो क्या हुआ?

फ़रियादी: महाराज! कल्लू बनिये की दीवार गिर पड़ी और मेरी बकरी उसके नीचे दब गयी। न्याय हो।

राजा : कल्लू बनिये को पकड़ लाओ।

(दरबान दौड़कर बाहर से बनिये को पकड़ लाते हैं)

राजा : क्यों रे बनिये, इसकी बकरी दबकर क्यों मर गयी?

कल्लू : महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं। कारीग़र ने ऐसी दीवार बनायी कि गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, कल्लू को छोड़ दो। कारीग़र को पकड़ लाओ।

(कल्लू जाता है। दरबान कारीग़र को पकड़ लाते हैं।)

राजा : क्यों रे कारीग़र! इसकी बकरी कैसे मर गयी?

कारीग़र : महाराज! मुझे छोड़ दो। चूनेवाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, इसे छोड़ दो। उस चूने वाले को बुलाओ।

(कारीग़र चला जाता है, चूने वाला पकड़कर लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे चूने वाले! इसकी बकरी कैसे मर गयी?

चूने वालाः महाराज! भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया। इसी से चूना कमज़ोर हो गया।

राजा : तो भिश्ती को पकड़ो। इसको छोड़ दो।

(भिश्ती लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे भिश्ती! इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गयी?

भिश्ती : महाराज! गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मशक इतनी बड़ी बना दी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।

राजा : अच्छा, भिश्ती को निकालो। कसाई को लाओ।

(भिश्ती निकाला जाता है। कसाई लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे कसाई! तू ने ऐसी बड़ी मशक क्यों बनायी?

कसाईः महाराज, गड़रिये ने टके की ऐसी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मशक बड़ी बन गयी।

राजा : अच्छा, कसाई को निकालो। गड़रिये को लाओ।

(कसाई निकाला जाता है। गड़रिया लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे गड़रिये! ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेचा?

गड़रिया : महाराज! उधर से कोतवाल की सवारी आयी, उसकी भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल नहीं किया। मेरा कुछ दोष नहीं।

प्रश्न

- किन-किन चीज़ों का उपयोग करके दीवार बनाने से दीवार मजबूत रहती है?
- आपके हिसाब से दीवार गिरने का दोषी कौन होना चाहिए और क्यों?
- राजा ने कोतवाल को फाँसी देने का निर्णय सुनाया था? क्या यह उचित था? क्यों?
- यदि आप राजा के स्थान पर होते तो क्या निर्णय लेते?

राजा : इसको निकालो। कोतवाल को पकड़कर लाओ।

(कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है।)

राजा : क्यों रे कोतवाल! तूने सवारी इतनी धूम-धाम से क्यों निकाली कि गड़रिये ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी।

कोतवालः महाराज! मेरा कोई दोष नहीं है।

राजा : कुछ नहीं! ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो।

(दरबान कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं।)

अंक तीन

(गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है।)

गोवर्धनदासः गुरुजी ने हमको बेकार में यहाँ रहने को मना कर दिया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या? खाते-पीते मस्त पड़े हैं।

(चार सिपाही चारों ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं।)

सिपाही : चलो, उठो! मिठाई खाकर खूब मोटे हो गये हो। आज मज़ा आएगा।

गोवर्धनदासः (घबराकर) हें, यह मुसीबत कहाँ से आयी? अरे भाई! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझे पकड़ रहे हो?

सिपाही : बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने के लिए गये, फाँसी का फंदा बड़ा निकला, क्योंकि साहब दुबले हैं। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी को मारने के अपराध में किसी-न-किसी को सज़ा देना ज़रूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

गोवर्धनदासः हाय! मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी कहाँ हो! बचाओ गुरुजी! गुरुजी!

(महंत वहाँ आ जाते हैं।)

महंत : अरे बच्चा गोवर्धनदास! तेरी यह क्या दशा है?

गोवर्धनदासः (हाथ जोड़कर) गुरुजी! दीवार के नीचे बकरी दब गयी जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरुजी बचाओ।

महंत : कोई चिंता की बात नहीं बेटा! (भौंहे चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो! मुझे शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो!

(सिपाही उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं। गुरुजी चेले के कान में कुछ समझाते हैं।)

गोवर्धनदासः तब तो गुरुजी! हम फाँसी पर चढ़ेंगे।

महंत : नहीं बच्चा! हम बूढ़े हो गये हैं, हम को चढ़ने दो।



(इस प्रकार दोनों बहस करते हैं। सिपाही लोग चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं।)

राजा : यह क्या गोलमाल है?

सिपाही : महाराज! शिष्य कहता है, मैं फाँसी पर चढ़ूँगा, गुरु कहते हैं कि मैं फाँसी पर चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है?

राजा : (गुरु से) बाबाजी, बोलो, आप फाँसी पर क्यों चढ़ना चाहते हैं?

महंत : राजा! इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

गोवर्धनदास: नहीं, हम! हमको हुक्म है।

कोतवाल: हम लटकेंगे, हमारे कारण तो दीवार गिरी।

राजा : चुप रहो सब लोग! राजा के जीते-जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हम को फाँसी चढ़ाओ, जल्दी करो।

(राजा को फाँसी पर लटका देते हैं।)

परदा गिरता है।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. तुम्हें यह नाटक कैसा लगा? इसकी विशेषताएँ बताइए।
2. इस नाटक को सुनने के बाद उस समय की किन परिस्थितियों का पता चलता है?
3. राज्य प्रशासन में नागरिकों का क्या महत्व है?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. पाठ में आये मुख्य पात्रों के नाम क्या है?
2. पात्रों का स्वभाव कैसा है?
3. अंत में राजा ने क्या निर्णय लिया?

(इ) पाठ के आधार पर 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए।

1. नारायण दास : गुरुजी! यह नगर तो बहुत गंदा है। ( )
2. गोवर्धन दास : प्रणाम गुरुजी! मैं हमेशा आपको याद करूँगा। ( )
3. राजा : क्यों रे चूनेवाले! इसकी बकरी कैसै भाग गयी। ( )
4. कोतवाल : महाराज! मेरा कोई दोष नहीं है। ( )
5. महंत : राजा! इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा, सीधे नरक जाएगा। ( )

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जिसका भीतर-बाहर एक-सा हो और विद्यानुराग, उपकार आदि गुण जिसमें सहज हो। अधिकार में क्षमा, विपत्ति में धैर्य, संपत्ति में निराभिमान और युद्ध में जिसकी स्थिरता हो, वह ईश्वरीय सृष्टि का रत्न है। हरिश्चंद्र में ये सब गुण सहज हैं। दान करके आपको प्रसन्नता होती है और कितना भी दे, पर संतोष नहीं होता।

1. हमें प्रसन्नता कब होती है?
2. हरिश्चंद्र में कौन-से गुण विद्यमान हैं?
3. अधिकार में क्षमा, विपत्ति में धैर्य किसमें होना चाहिए?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

1. राजा को गंभीर विषयों पर निर्णय लेने के लिए क्या करना चाहिए?
2. अपराधी किसे कहते हैं? राजा को दंड-नीति का ज्ञान कितना होना चाहिए?
3. इस पाठ के द्वारा आपने क्या सीखा?

(आ) 'अंधेर नगरी' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

'अंधेर नगरी' नाटक को अपने शब्दों में कहानी के रूप मे लिखिए।

(ई) प्रशंसा

समयस्फूर्ति का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

भाषा की बात

(अ) अनके शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।

जैसे : भेड़ चराने वाला - गड़रिया

काम करने वाला -

पानी ढोने वाला -

थानेदारी करने वाला -

(आ) बेमेल शब्द चुनकर लिखिए।

1. पूरब - पश्चिम - दक्षिण - पीछे
2. चावल - गेहूँ - जवार - बैंगन
3. राजा - शेर — सैनिक - दरबार

(इ) उदाहरण के अनुसार लिखिए।

उदाहरण : अधिक पानी से चूना कमज़ोर हो गया था। इसलिए दीवार मज़बूत नहीं बन सकी। रेखांकित शब्द 'कमज़ोर' और 'मज़बूत' एक-दूसरे के विलोमार्थक हैं। अब आप ऐसे ही नीचे दिये गये शब्दों के विलोमार्थक शब्दों का उपयोग करते हुए वाक्य बनाइए-

1. उचित 2. न्याय

(ई) उदाहरण के अनुसार लिखिए।

उदाहरण : 1. भिश्ती ने चूने में पानी डाल दिया।

2. राजा ने कहा कि भिश्ती को पकड़ो।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द कारक हैं।

1. चलो यहाँ से ऐसी अंधेर नगरी में नहीं रहना है।
2. राजा ने गोवर्धन दास को फाँसी पर लटकाने को कहा।
3. बनिये को दरबार में लाओ।
4. भिश्ती को निकालो। कसाई को लाओ।

परियोजना कार्य

अपने गाँव में रहने वाले लोगों के विभिन्न व्यवसायों की जानकारी इकट्ठा करो और सूची बनाओ कि कौन क्या-क्या काम करता है?

उपवाचक

अपने स्कूल को एक उपहार

– ऋतु भूषण

इस स्कूल में राजू का पहला दिन था। पिछली रात वह कुछ भी न खा पाया था और सारी रात जागता रहा और सोचता रहा...

अपने पुराने स्कूल में वह एक मेधावी छात्र रहा था। पिछले पाँच वर्ष से वह हर वर्ष, कक्षा में सबसे आगे था। उसे कहानियों की किताबें पढ़ने का शौक था। अतः उसकी अंग्रेज़ी और हिंदी बहुत अच्छी थी। उसे सामान्य ज्ञान की पुस्तकें पढ़ना भी बहुत पसंद था और इससे उसका विज्ञान और इतिहास का ज्ञान भी विकसित हो गया। गणित का तो वह जादूगर था। अध्यापक के बोर्ड पर पूरा प्रश्न लिखने से पूर्व ही वह उसका उत्तर बताने के लिए अधीर हो हाथ उठा देता था।

पुराने स्कूल में उसके बहुत सारे मित्र थे और सभी अध्यापक भी उसे पसंद किया करते थे। वह सब से खुशी-खुशी मिलता और मुस्करा कर 'हैलो' कहता। जब भी कोई कठिनाई में होता तो राजू सबसे पहले उसकी मदद के लिए पहुँच जाता। उसके पुराने स्कूल में कभी किसी ने उसकी कमजोरी की ओर भी ध्यान नहीं दिया-उसकी टांगे बहुत पतली और दुर्बल थीं। उसके घुटनों में शक्ति नहीं थी और अधिक समय तक वे उसके शरीर का भार बर्दाश्त नहीं कर पाती थीं। अतः वह ज्यादा देर तक खड़ा नहीं रह पाता था और इसीलिए उसे खेलने की मनाही थी। जब भी उनके स्कूल में मैच होता, राजू अपने साथियों को खेलते हुए देखता भर रहता और जोर-शोर से उनका उत्साह बढ़ाता रहता। जब उसके मित्र मैच हारने लगते तो राजू के प्रेरणादायक शब्दों से उनमें आशा का संचार होता और वे नयी स्फूर्ति से खेलने लगते।

सारी रात राजू अपने पुराने स्कूल के विषय में सोचता रहा और उसने सच्चे मन से प्रार्थना की कि उसका नया स्कूल भी उसके पुराने स्कूल जितना ही अच्छा हो। वैसे राजू यह बात भली-भाँति जानता था कि यदि स्वर्ग में भी स्कूल हों तो वे भी उसके पुराने स्कूल से ज्यादा अच्छे तो नहीं हो सकते। उसके स्कूल छोड़ते समय सभी मित्र कितने रो रहे थे? उसके संगी-साथी, अध्यापकगण और यहाँ तक कि प्रधानाचार्य ने भी उसके पिता जी से उसे वहीं छोड़ जाने का अनुरोध किया था। लेकिन उनकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया जा सका। उसेक पिता जी का तबादला हो गया था और अपने इकलौते बेटे को वहीं पर छोड़ जाने की बात वे सोच भी नहीं सकते थे।

अगले दिन प्रातः राजू जल्दी ही उठ गया और फटाफट उसने अपनी वरदी भी पहन ली। आइने

में अपने को देखकर सोचने लगा कि वरदी तो अच्छी लग रही है। हो सकता है कि स्कूल भी अच्छा ही हो। लेकिन फिर भी उससे नाश्ता नहीं किया जा सका। माता-पिता समझ गये और उन्होंने जबरदस्ती नहीं की। पिता जी ने अपनी गाड़ी में स्कूल के फाटक तक छोड़ दिया और अपने बेटे को मुस्करा कर विदा किया।

राजू धीरे-धीरे (क्योंकि वह तेज नहीं चल सकता था) और कुछ लंगड़ा कर चलने लगा। उसकी मधुर मुस्कान को लोग घूरते रहे और कुछ ने तो उसकी टांगों की ओर संकेत करके हंसते हुए उसका मज़ाक भी उड़ाया।

कुछ क्षणों में ही पूरा मैदान और बरामदे कौतूहल से देखने और उसकी ओर इशारा करके हँसने वालों से भर गये। स्कूल के अध्यापक भी पास से ऐसे गुजरे जैसे कुछ हो ही नहीं रहा है।

जब पहला पीरियड आरंभ हुआ तो अध्यापक ने राजू को कक्षा में सबसे पीछे बिठा दिया। जब राजू से उसका परिचय पूछा गया तो उसने बताया कि वह एक गाँव के स्कूल से आया है। इस पर अध्यापक को और दूसरे छात्रों को भी बहुत हँसी आयी। मधुर स्वभाव वाले राजू ने इसके पहले गुस्से को कभी भी महसूस नहीं किया था। वह स्वयं को यही समझाता रहा कि अभी धैर्य रखने की जरूरत है, जल्दी ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन पूरे दिन हर पीरियड में यही व्यवहार दुहराया जाता रहा। हर बार एक नया अध्यापक आता और राजू का हर बार अपमान होता। क्या वे राजू को अपने पुराने स्कूल पर शरमिंदा करने में सफल हुए?

नहीं, राजू तो किसी अलग ही मिट्टी का बना हुआ था। उसने यह प्रमाणित करने का निश्चय किया था कि गाँवों के स्कूल शहरों के बराबर ही अच्छे हैं। उस शाम राजू ने अपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया। उनके जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों पर मुस्करा कर रह गया क्योंकि वह झूठ भी नहीं बोलना चाहता था।

अगला दिन, उससे और अगला, और फिर महीने का हर दिन उसके लिए ऐसा ही रहा। उसकी कक्षा में उसके हाथ उठाने पर भी उसे प्रश्नों का उत्तर नहीं देने दिया गया। उसका कोई मित्र भी नहीं बन पाया था। आधी छुट्टी में जब बाकी सभी लड़के खेल खेलते तो वह कक्षा में ही बैठा रहता। अब तक पूरा स्कूल जान गया था कि राजू एक 'गंवार' लड़का है और उसे अपने गाँव के स्कूल का बड़ा 'घमंड' है।

आखिरकार राजू ने इस स्थिति से निबटने के लिए बड़ी चतुराई से एक योजना बनायी। कक्षा के अध्यापकों द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर उसने हाथ खड़ा करना ही बंद कर दिया। परिणामस्वरूप बहुत शीघ्र ही अध्यापकों और छात्रों ने उस पर ध्यान देना बंद कर दिया। राजू यह जानता था कि

एक महीने के बाद उसकी वार्षिक परीक्षा होगी इसलिए उसने घर पर अधिक परिश्रम किया-आखिर उसे नये स्कूल के समक्ष प्रमाणित करना था कि उसका पुराना गाँव का स्कूल कोई 'मूर्खों का स्वर्ग' नहीं था।

सबने मान लिया था कि राजू को तो फेल होना ही है। जैसे-जैसे समय पास आता गया, सभी लड़के पढ़ने में व्यस्त होते गये पर राजू को किताबें लिए देखकर उस पर हँसने और मज़ाक उड़ाने का समय फिर भी निकाल ही लेते। राजू अब बहुत धैर्यवान हो गया था और चुपचाप मन में मुस्कराते हुए अपनी पढ़ाई करता रहा। एक सप्ताह में ही वार्षिक परीक्षा समाप्त हो गयी। राजू दो सप्ताह की छुट्टी के लिए गाँव वापस गया। उसके बाद ही परीक्षा परिणाम निकलना था।

परिणाम निकलने के पहले दिन राजू लौट आया और अगले दिन पूरे आत्मविश्वास से अपने पिता के साथ परीक्षा-फल देखने गया। एक बार फिर वह कक्षा में प्रथम आया था। उसके पिता जी खुश थे लेकिन राजू के हर्ष की तो सीमा ही नहीं थी। प्रथम आने पर वह इतना प्रसन्न कभी नहीं हुआ था। उसने राहत की सांस ली। अब उसे लगा कि उसने स्कूल को सुंदर और समुचित उपहार समर्पित किया है।

प्रश्न :

1. राजू को उसका पुराना स्कूल कैसा लगता था?
2. राजू के प्रति नये स्कूल के साथियों का व्यवहार कैसा था?
3. राजू ने किस तरह अपने पुराने स्कूल को उपहार समर्पित किया?

8 नीति दोहे

उन्मुखीकरण

फलवाले जो तरु होते हैं धरती तक नम जाते।
बिन फलवाले वृक्ष व्यर्थ ही अपनी अकड़ दिखाते।
बनो वृक्ष फलदार, नम्रता से जीवन सरसाओ।
बुलबुल मीठा बोले, कोयल प्यार सभी से पाये।
पर कौवे की बोली उसको अपमानित करवाये।
बुलबुल कोयल बनो, न बोली कौवे की अपनाओ।

प्रश्न

1. कवि ने बिना फल वाले वृक्षों के विषय में क्या कहा है?
2. फलदार वृक्ष की विशेषता बताइए।
3. बुलबुल और कौए में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उद्देश्य

छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास करना है, जिससे उनका जीवन समाज के अनुकूल बन सके।

विधा विशेष

दोहे बहुत प्रभावशाली होते हैं। ये मात्रिक छंद हैं। दोहे की पहली और तीसरी पंक्ति में १३-१३ मात्राएँ तथा दूसरी और चौथी पंक्ति में ११-११ मात्राएँ होती हैं। प्रस्तुत पाठ का नाम 'नीति-दोहे' है। यहाँ दो प्राचीन कवियों १. रहीम , २. बिहारी से छात्रों का परिचय कराया जा रहा है। वे नीतिपरक एवं उपदेशात्मक दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये गद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

पाठ प्रवेश : *नैतिक गुणों के विकास द्वारा ही हम अच्छे-बुरे, सही-गलत में भेद कर सकते हैं। ऐसे ही रहीम व बिहारी के नीति संबंधी दोहे हम इस पाठ के अंतर्गत पढ़ेंगे।*



कवि - रहीम

जीवनकाल - १५५६ - १६२६

प्रसिद्ध रचना - रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, श्रृंगार सोरठ

विशेष - संस्कृत, अरबी, फारसी के विद्वान थे।
अकबर के मित्र, प्रधान सेनापति व मंत्री थे।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।।

प्रश्न

- कवि कुंज व वन में किसे ढूँढ़ता है और क्यों?
- ईश्वर दुखियों के द्वार पर क्यों रहता होगा?
- 'जग की अनित्यता' से आप क्या समझते हैं?

कवि - बिहारी

जीवनकाल - १५९५-१६६३

प्रसिद्ध रचना - सतसई

विशेष - इनके दोहे नीतिपरक होते हैं। इनके दोहों के लिए 'गागर में सागर' भर देने वाली बात कही जाती है।



कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।
उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।।

नर की अरु नल नीर की, गति एकै कर जोइ।
जेतौ नीचौ ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।

प्रश्न

- ईश्वर प्रकृति में कहाँ-कहाँ व्याप्त है?
- कवि ईश्वर से किस प्रकार की प्रतिभा प्रदान करने को कहता है?
- सुख-दुख में समान क्यों रहना चाहिए?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. नीति वचनों के प्रभाव से हमारे जीवन में, आचार-विचार में क्या कोई परिवर्तन आता है? बताइए।
2. वस्तु विनियोग की दृष्टि से एक के स्थान पर उससे अधिक वस्तुएँ खरीदना क्या ठीक है? क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

१. पाठ से 'ध्वनि साम्य' वाले शब्द चुनकर लिखिए। जैसे : रीत, मीत

२. रहीम के दोहे में 'पानी' शब्द का प्रयोग कितने बार हुआ है। उनका अलग-अलग अर्थ क्या है?

३. भाव वाला दोहा लिखिए- ''आदमी और नल के पानी की एक ही गति होती है। जितना नीचे (विनम्र) होकर चलते हैं, उतने ही ऊपर उठते हैं। अर्थात विनम्र व्यक्ति महान बनता है।''

(इ) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

गुण बड़े एक से एक प्रखर
हैं छिपे मानवों के भीतर
मेहंदी में जैसे लाली हो,
बत्ती वर्तिका-बीच उजियाली हो।
बत्ती जो नहीं जलाता है।
रोशनी नहीं वह पाता है।

– दिनकर की वीर कविता से

१. प्रखर शब्द का अर्थ ..... है।

२. मेहंदी का रंग ..... होता है।

३. दिये की बत्ती ..... फैलाती है।

४. ''बत्ती जो नहीं जलाता है, रोशनी नहीं वह पाता है।'' कवि इस काव्य-पंक्ति द्वारा क्या संदेश देना चाहता है?

(ई)

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

१. रहीम के अनुसार सच्चा मित्र कौन है और आप किसको सच्चा मित्र मानते हैं? क्यों?

२. बिहारी ने सोने की तुलना धतूरे से की है, सोने से पागलपन क्यों उत्पन्न होता है। अपने विचार लिखिए।

३. रहीम और बिहारी की नैतिक बातों में क्या अंतर स्पष्ट होता है?

(आ) किन्हीं दो दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

पाठ में दिये गये दोहों के आधार पर कुछ सूक्तियों का सृजन कीजिए।

(ई) प्रशंसा

नीचे दिये गये दोहों में बतायी गयी सच्चाइयों को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो क्या लाभ होंगे? उन गुणों की प्रशंसा करते हुए लिखिए।

क. कहि रहीम संपत्ति सगे,.....सोहू साँचे मीत।।

ख. कनक, कनक ते, ...इहिं पाए बौराइ।।

भाषा की बात

(अ) पर्यायवाची शब्दों के अनुसार बेमेल शब्द चुनकर लिखिए।

१. नीर, पीर, जल, पानी - .....

२. मीत, रीत, मित्र, दोस्त - .....

३. जग, संसार, विश्व, मग -.....

(आ) निम्न लिखित वाक्यांश पढ़िए।

• कनक पाने से आदमी पागल हो जाता है।

• कनक खाने से आदमी पागल हो जाता है।

इन दो वाक्यों में 'कनक' शब्द का प्रयोग हुआ है। पहले वाक्य में जो 'कनक' है उसका अर्थ सोना है। दूसरे वाक्य में कनक का अर्थ धतूरा है।

इस प्रकार के दो शब्द पाठ से चुनकर भिन्नार्थी वाक्य बनाइए।

(इ) निम्न लिखित शब्दों के प्रचलित हिंदी रूप लिखिए।

जैसे - परे - पड़े (रे, ड़े)

गुन, बिपत्ति, साँचे

(ई)

परियोजना कार्य

भाषा कार्य

१. इन दोहों का शुद्ध उच्चारण करने की प्रतियोगिता का आयोजन कक्षा में करें।

२. एक-एक छात्र किसी एक दोहे के भाव के आधार पर कक्षा में भाषण देंगे।

9 दो साक्षात्कार

उन्मुखीकरण

विधाता द्वारा बनायी गयी सृष्टि में अनेक जीव-जंतुओं ने इस संसार में जन्म लिया है। जिसमें पशु-पक्षियों को मानव की तुलना में कुछ विशिष्ट प्राकृतिक गुण प्राप्त हुए हैं। पक्षियों को मुक्त आकाश में विचरण करते देख कर हम यही सोचेंगे कि काश हम भी उनकी तरह आकाश में ऊँची उड़ान भर पाते। इसी आकांक्षा ने विलबर राइट व ओरोविन राइट भाइयों को हवाई जहाज़ की खोज की प्रेरणा दी और उन्होंने आकाश में उड़नेवाले हवाई जहाज़ का आविष्कार किया।

प्रश्न

१. हवाई जहाज़ का आविष्कार किसने किया?
२. उड़ते हवाई जहाज़ को देखकर आपको क्या लगता है? क्यों?
३. पशु-पक्षी और मानव गुणों में क्या अंतर है?

उद्देश्य

देश की सुरक्षा का कार्य अत्यंत महान कार्य है। इसके लिए अनेक प्रकार के नवीन तथा वैज्ञानिक उपकरण अपना विशेष दायित्व निभाते हैं। उन्हीं में कृत्रिम उपग्रह, रॉकेट, मिसाइल तथा रासायनिक वायु आदि का आविष्कार हुआ है। इस पाठ के द्वारा छात्रों में देश की सुरक्षा की भावना जागृत कराना, उपकरणों का आविष्कार करने वाले वैज्ञानिक की जानकारी के द्वारा प्रेरणा देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

इस पाठ में साक्षात्कार विधा का परिचय दिया गया है। जिसमें टेसी थॉमस, मिसाइल वुमन द्वारा इंडिया टुडे साप्ताहिक पत्रिका को दिया गया साक्षात्कार और भारत के पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन मान्य अब्दुल कलाम जी का साक्षात्कार जो कि कुछ छात्रों ने लिया था। यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रत्यक्ष रूप से प्रश्नोत्तर द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया ही साक्षात्कार है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये गद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

''आज हमारे यहाँ जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिज़ाइल मिसाइल की बात की जाती है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है- 'एपीजे अब्दुल कलाम'। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। मैं गर्व के साथ कहना चाहती हूँ कि वे मेरे गुरु हैं।'' इतने सुंदर विचार रखने वाली भारत की प्रथम 'मिसाइल वुमन' शिष्या टेसी थॉमस और उनके गुरु एपीजे अब्दुल कलाम के बारे में जानने के लिए आगे पढ़ें...

साक्षात्कार - एक



तमिलनाडु के रामेश्वरम की गलियों में समाचार पत्र बेचने वाला एक निर्धन बालक एक दिन सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा भारत का राष्ट्रपति बनेगा, ऐसा किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था। किंतु उस गरीब बालक ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और लगन से यह सिद्ध कर दिखाया कि मनुष्य के लिए विश्व में कुछ भी असंभव नहीं है। मन में अगर चाह हो तो उसे राह अपने आप मिल जाती है। जी हाँ, यह बालक कोई और नहीं बल्कि हमारे पूर्व राष्ट्रपति और मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध ''भारत रत्न'' अबुल फ़कीर जैनुलाबुद्दीन अब्दुल कलाम हैं।

राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान कुछ छात्रों ने उनका साक्षात्कार लिया था। प्रस्तुत हैं उसी की कुछ झलकियाँ-

छात्र : बढ़ती जनसंख्या और अन्य कई प्रकार की सामाजिक समस्याएँ हैं, जो हमारे देश में किसी महामारी की तरह फैली हुई हैं। उनके बारे में जागरूकता लाने के लिए हम छात्र क्या कर सकते हैं?

अब्दुल कलामजी: इसमें दो राय नहीं कि हमारे देश के सामने बढ़ती जनसंख्या और अन्य कई सामाजिक समस्याएँ हैं। पर साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि पूरे विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ ५० प्रतिशत से भी अधिक युवाशक्ति है। जो देश के आर्थिक विकास में प्रमुख योगदान दे रही है। यह भी देखने में आया है कि जहाँ कहीं भी महिला साक्षरता दर अधिक है, वहाँ यह

साक्षरता दर बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने में कारगर साबित हुई है। एक छात्र होने के नाते आप सब कम से कम पाँच महिलाओं को शिक्षित करें, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानतीं। साथ ही आप उन्हें समाज की उन प्रमुख समस्याओं के बारे में भी बतायें, जिनसे आजकल की महिलाओं को संकट का सामना करना पड़ रहा है।

छात्र : भारत के राष्ट्रपति के रूप में आप बाल मज़दूरी की समस्या को समाप्त करने के लिए क्या सुझाव देना चाहेंगे?

अब्दुल कलामजी: क़ानूनन बाल मज़दूरी करवाना एक अपराध है। इस दशक के अंत तक हमें इसे जड़ से समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। भारतीय संसद ने भी संविधान संशोधन अधिनियम २००२ के माध्यम से ६ से १४ वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा पाने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में घोषित कर दिया गया है। यह बहुत ज़रूरी है कि बच्चे अभिभावकों को नशाखोरी से मुक्ति दिलाने के लिए मुहिम चलायें और प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से उन्हें शिक्षित करने की व्यवस्था भी करें। ऐसी समस्या से तीन अलग-अलग उपायों से निपटा जा सकता है- (क) बच्चा स्वयं अपनी पढ़ाई जारी रखने में रुचि दिखायें। (ख) माता-पिता को शिक्षित करके और (ग) बच्चों से काम लेने वाले मालिकों में आत्म-नियंत्रण की प्रवृत्ति का विकास करके, ताकि वे उन बच्चों को अपने बच्चे जैसा ही समझें।

छात्र : वर्तमान में भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन में लगभग सभी स्तरों पर व्याप्त है। छात्र समुदाय सन् **२०२०** तक भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने के लिए क्या-क्या कर सकता है?

अब्दुल कलामजी: सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है। यह आंदोलन अपने घर और विद्यालय से ही आरंभ करना होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन में मेरी दृष्टि में केवल तीन ही तरह के लोग सहायक सिद्ध हो सकते हैं। वे हैं- (क) माता, (ख) पिता और (ग) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक। यदि ये तीनों बच्चों को ईमानदारी और सच्चाई का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई उनको हिला पाएगा। अतः हर घर में इस तरह के आंदोलन की आवश्यकता है, सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को मिटा सके। आप सब यह संकल्प लें कि आप सदैव ईमानदार एवं भ्रष्टाचारमुक्त जीवन का निर्वाह करेंगे और दूसरों के लिए आदर्शवान बने रहेंगे।

छात्र : बड़े हमेशा बच्चों को कुछ न कुछ उपदेश देते रहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अनुशासित रहना चाहिए, कुछ लोग कहते हैं खूब पढ़ाई करनी चाहिए, तो कुछ लोग कहते हैं कि ईमानदार बनना चाहिए, कड़ी मेहनत करनी चाहिए आदि-आदि। वैसे तो इन बातों का पालन करना महत्वपूर्ण है, किंतु एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण क्या है?

अब्दुल कलामजी: एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण है- उसकी अपने प्रति ईमानदारी और दूसरों के प्रति आदर का गुण। ये गुण आपको निस्संदेह आदर्श नागरिक बनायेंगे।

छात्र : एक अंतिम प्रश्न। एक छात्र के रूप में मैं विकसित भारत के आपके स्वप्न को साकार करने की दिशा में क्या कर सकता हूँ?

अब्दुल कलामजी: एक छात्र होने के नाते, आप जिस कक्षा में भी पढ़ते हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें। अपने जीवन में पहले एक लक्ष्य बनायें। फिर उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव प्राप्त करें। बाधाओं से लड़ते हुए उन पर विजय प्राप्त करें। निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए सबसे बढ़िया काम करने की ओर बढ़ते रहें। साथ ही नैतिक मूल्यों को भी ग्रहण करें। छात्रों को हमेशा परिश्रमी बनने का प्रयास करना चाहिए। छुट्टी के दिनों में छात्र गरीब और सुविधाओं से वंचित बच्चों को पढ़ाने का काम करें और इसे अपने जीवन में एक उद्देश्य के रूप में लें। छात्र अधिक से अधिक पौधे लगायें। इससे पर्यावरण संतुलित बने रहने में सहायता मिलेगी। हमारे ये कार्य न केवल हमको, बल्कि हमारे राष्ट्र को भी विकास और समृद्धि के पथ पर ले जायेंगे।

(साभारः हम होंगे कामयाब, एपीजे अब्दुल क़लाम)

प्रश्न

- निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए सरकार द्वारा क्या-क्या क़दम उठाये जा रहे हैं?
- एक छात्र में कौन-कौन से महत्वपूर्ण गुण होने चाहिए?
- एक छात्र के रूप में विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?
- भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त करने में छात्रों का क्या योगदान हो सकता है?
- अनुशासन, ईमानदारी, मेहनत इन गुणों का छात्र के जीवन में क्या महत्व है?

साक्षात्कार - दो

बड़ी मुश्किल से मुझे टेसी थॉमस का साक्षात्कार करने का मौक़ा मिला था। मैं सुबह-सुबह ही हैदराबाद के डिफेंस क्वार्टर्स में स्थित उनके घर पहुँच गयी। जैसे ही घर की घंटी बजायी ज़रीदार साड़ी में भारतीय सांस्कृतिक छाप लिये टेसी जी ने मेरा मुसकुराकर स्वागत किया। मैं पहली ही नज़र में उनकी सादगी की प्रशंसक बन गयी।

घर में देखा तो पुरस्कारों और सम्मानों का भंडार पड़ा है। किंतु इसमें भी विशेष था 'हाथी वाला स्मारक' जो उन्हें उनके इंजीनियरिंग की पढ़ाई के समय कॉलेज की ओर से दिया गया है। उनकी शिक्षा-दीक्षा केरल स्थित अलप्पुझा में हुई। यहीं पर उनका जन्म हुआ था। रक्षा अनुसंधान और विज्ञान को पुरुषों का क्षेत्र माना जाता है। मगर टेसी थॉमस इसका अपवाद हैं। उन्होंने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़-निश्चय से पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्र में सफलता के नये शिखर तय किये हैं। थॉमस रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) के अग्नि-५ कार्यक्रम की निदेशक बनीं। उन्होंने देश के किसी मिसाइल प्रॉजेक्ट की पहली महिला प्रमुख बनने का गौरव प्राप्त किया। चलिए उन्हीं से उनके बारे में जानते हैं।

साक्षात्कारकर्ता - आप अपने आरंभिक जीवन के बारे में क्या बता सकती हैं?

टेसी थॉमस - मुझे बचपन से ही कुछ अलग करने की चाह थी। मैं अंतरिक्ष के सपने देखती थी। यही कारण रहा कि मैंने गणित और विज्ञान विषय को अपने तन-मन में बसा लिया। इसमें मेरी पाठशाला (अलप्पुझा) और अध्यापकों का बहुत बड़ा योगदान रहा। अध्यापकों के सहयोग और सच्ची लगन से सफलता की बुलंदियों को प्राप्त किया जा सकता है।

साक्षात्कारकर्ता - जब कभी कोई आपको भारत की 'प्रथम मिज़ाइल मिसाइल वुमन' और 'अग्नि-पुत्री' कहता है, तो आपको कैसा लगता है?

टेसी थॉमस - मुझे बेहद खुशी होती है। मेरे पास बयान करने के लिए कोई शब्द नहीं है। सन् १९८५ में डीआरडीओ द्वारा देशभर के दस युवा वैज्ञानिकों को चुना गया उसमें मेरा नाम भी था। उस दिन मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। मानो मेरे सपनों को पंख मिल गये थे। मैंने 'अग्नि मिज़ाइल' के अभियान से जुड़कर जो आनंद प्राप्त किये, वे सदा याद रहेंगे।

साक्षात्कारकर्ता - आप अपना आदर्श किसे मानती हैं?

टेसी थॉमस - आज हमारे यहाँ जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिज़ाइल मिसाइल की बात की जाती है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है- 'एपीजे अब्दुल कलाम'। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। मैं गर्व के साथ कहना चाहती हूँ कि वे मेरे गुरु हैं। (डीआरडीओ में टेसी थॉमस, एपीजे अब्दुल कलाम के नेतृत्व में काम कर चुकी हैं।) उन्होंने ही मुझे प्रेरणा के 'अग्नि पंख' दिये हैं। वे महान थे, महान हैं और महान रहेंगे। उनकी नेतृत्व क्षमता बेमिसाल है। उन्हें मैं अपना आदर्श मानने में गर्व अनुभव करती हूँ।

साक्षात्कारकर्ता - बच्चों को आप क्या सुझाव देना चाहती हैं?

टेसी थॉमस - बच्चों से मैं यही कहना चाहती हूँ कि वे जो भी पढ़ें ध्यान से पढ़ें, मेहनत करें और लक्ष्य प्राप्त करने तक रुके नहीं। जो उन्हें पसंद हैं उसमें अपना जी-जान लगा दें। कमर कसकर तैयारी करें। सफलता अवश्य उनके क़दम चूमेगी।

प्रश्न

- आपसे किये गये अच्छे कार्य के लिए आपको कोई उपाधि मिलती है तो आपको कैसा लगता है?
- देश के किसी वैज्ञानिक से मिलने पर आपको कैसा लगता है?
- टेसी थॉमस बच्चों को क्या संदेश देती हैं?
- टेसी थॉमस को अग्निपुत्री का उपनाम क्यों दिया गया?
- बच्चे अपने व्यक्तित्व का निर्माण कैसे करें?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. एपीजे अब्दुल कलाम जैसे कुछ और महापुरुषों के नाम बताइए।
2. एपीजे अब्दुल कलाम और टेसी थॉमस में आपको सबसे अच्छी बात कौनसी लगी और क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. एपीजे अब्दुल कलाम का साक्षात्कार किसने लिया?
2. टेसी थॉमस का साक्षात्कार किसने लिया?
3. एपीजे अब्दुल कलाम ने बाल मज़दूरी को समाप्त करने के लिए क्या उपाय बताये?
4. टेसी थॉमस की स्कूली पढ़ाई कहाँ हुई? उन्हें किन विषयों में रुचि थी?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

- सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है।
- सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं।

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

विज्ञान की भी एक भाषा होती है। यदि आप ध्यान से देखें तो आपको पता चलेगा कि किस तरह ऋतुएँ बदलती रहती हैं। किस तरह किसी बीज से नन्हा पौधा निकलता है। किस तरह पानी पर कागज़ की नावें तैरती हैं। किस तरह पक्षी उड़ते हैं। किस तरह तितली फूल का रस पीती है। किस तरह गुब्बारा हवा से फूलता है। चारों ओर विज्ञान ही विज्ञान है। विज्ञान किताबों में कम आपकी समझ में ज्यादा बसता है। इसीलिए कुछ जानने की इच्छा हमेशा रहनी चाहिए। जो जानने की इच्छा नहीं रखता वह किताबें पढ़कर भी कुछ नहीं सीख सकता।

प्रश्न

- विज्ञान कैसा विषय है?
- विज्ञान के कुछ उदाहरण दीजिए।
- जानने की इच्छा न हो तो क्या होगा?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

1. भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन का आरंभ कहाँ से होना चाहिए?
2. डी.आर.डी.ओ. के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. टेसी थॉमस की कौनसी बात आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

1. अच्छे नागरिक बनने के लिए कौन से गुण होने चाहिए?
2. टेसी थॉमस अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मानती हैं। क्यों?

(इ) सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किसी एक साक्षात्कार को उचित शीर्षक देते हुए निबंध के रूप में लिखिए।

(ई) प्रशंसा

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार आदर्श योग्य हैं। इन विचारों को अमल में लाने के लिए आप क्या करेंगे?

भाषा की बात

(अ) उदाहरण के अनुसार वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

उदाहरण : आप **पौधा** लगाइए।

आप **पौधे** लगाइए।

अब नीचे दिये गये शब्दों के वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

(अ) बाधा, (आ) शक्ति, (इ) चुनौती, (ई) सफलता

(आ) नीचे दिये गये उदाहरणों की संरचना पर ध्यान दीजिए।

एक **निर्धन** बालक, एक **सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक** तथा भारत का राष्ट्रपति बना। मनुष्य के लिए विश्व में कुछ भी **असंभव** नहीं है।

(अ) निर्धन - निर् + धन ('निर्' उपसर्ग)

(आ) सुप्रसिद्ध - सु + प्रसिद्ध ('सु' उपसर्ग)

(इ) वैज्ञानिक - विज्ञान + इक ('इक' प्रत्यय)

(ई) असंभव - अ + संभव ('अ' उपसर्ग)

उपसर्ग और प्रत्यय वाले कुछ और शब्द लिखिए।

(इ)

(ई)

परियोजना कार्य

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक व राष्ट्रपति हैं। उनकी इसी प्रसिद्धि के लिए उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जा चुका है। अब आप इसी तरह अन्य भारत रत्नों की सूची बनाकर किसी एक बारे में लिखिए।

10 जल ही जीवन है

उन्मुखीकरण

पानी तो अनमोल है,
उसको बचा के रखिए।
बर्बाद मत कीजिए इसे,
जीने का सलीखा सीखिए।।

पानी को तरसते हैं,
धरती पे काफ़ी लोग यहाँ।
पानी ही तो दौलत है,
पानी सा धन भला कहाँ।।

प्रश्न

१. हमें किसे बचाकर रखना चाहिए?
२. हमें क्या सीखना चाहिए?
३. धरती पर अधिकांश लोग किसके लिए तरस रहे हैं?
४. हमारे लिए दौलत क्या है?
५. 'बर्बाद मत कीजिए इसे' इस पंक्ति द्वारा क्या भाव प्रकट होता है?

उद्देश्य

पानी हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण साधन है। पानी का सही उपयोग करके आने वाली पीढ़ियों के लिए बचा कर रखना चाहिए। इस विषय को लेकर पानी का महत्व व उपयोग और पानी संबंधी जानकारी दी जा रही है।

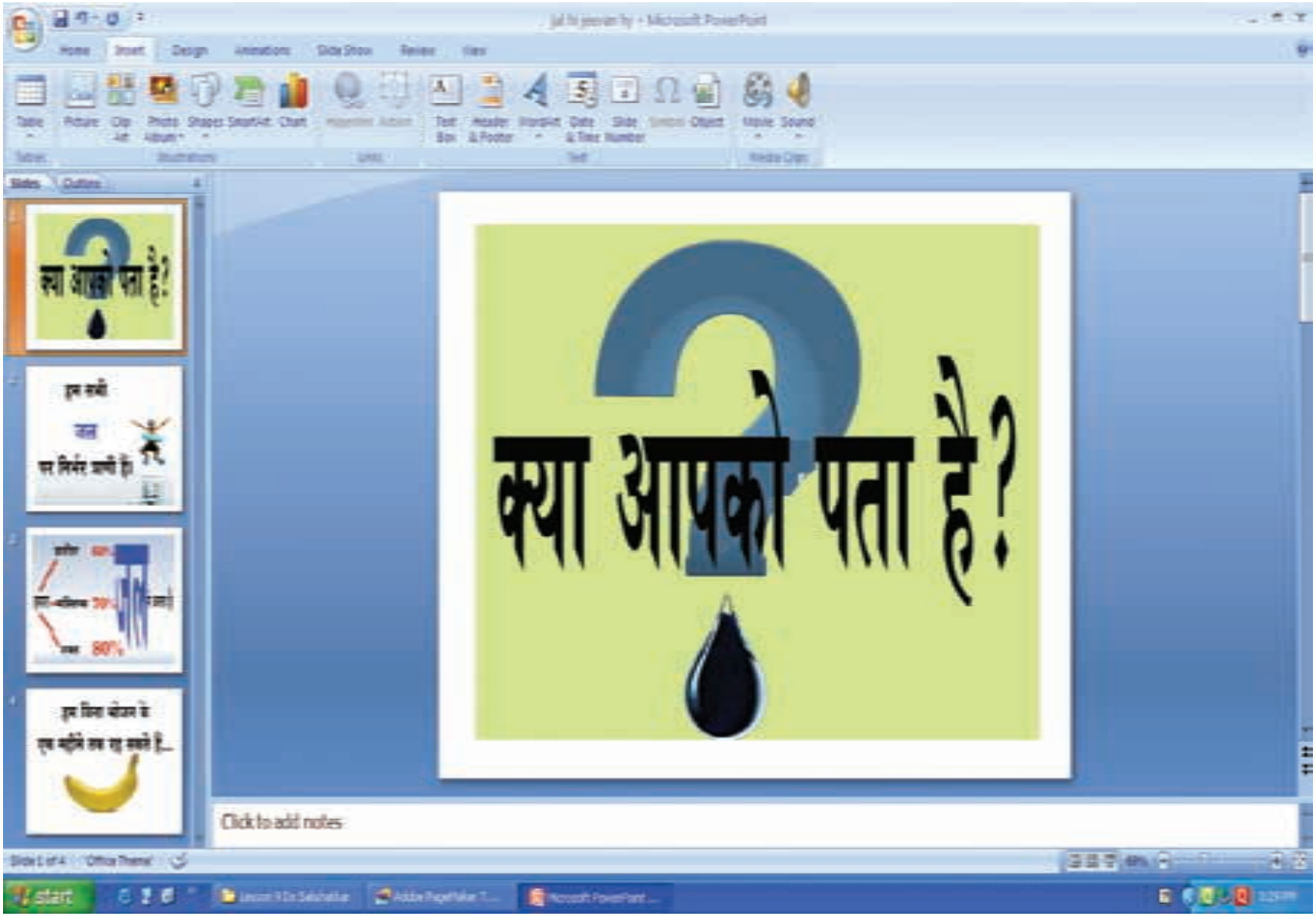
विधा विशेष

भाषा अनेक रूपों में प्रयोग की जाती है। मुख्य रूप से दसवीं कक्षा के स्तर पर बच्चों को अलग-अलग विधाओं से परिचय करने का प्रयास किया जा रहा है। इस पाठ को पॉवर पाइंट पर प्रस्तुत करने के उद्देश्य से दिया जा रहा है ताकि शिक्षक व छात्र तकनीक का उपयोग करते हुए विषय की समझ को सरलता से आत्मसात कर सकें।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ के प्रारंभ में दिये गये गद्यांश को ध्यान से पढ़िए, पाठांतर्गत विषय को समझिए।
2. पाठ को ध्यान से पढ़िए जिन शब्दों का अर्थ समझ में नहीं आया उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. उन शब्दों के अर्थों को पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में दी हुई तालिका में ढूँढ़िए।
4. समझ में नहीं आने वाले अंशों पर अध्यापक से चर्चा कीजिए।

पीपीटी प्रस्तुतकर्ता परिचय


क्या आपको पता है?
Click to add notes

क्या आपको पता है?

हम बिना भोजन के
एक महीने तक रह सकते हैं...



हम सभी
जल
पर निर्भर प्राणी हैं।



किंतु बिना
जल
के हम एक सप्ताह
से अधिक जीवित नहीं रह सकते।

शरीर 60%
हमारा मस्तिष्क 70% जल से बनता है
रक्त 80%

आज से करोड़ो वर्ष पहले जो
जल
धरती पर था अब भी वह है।




धरती के हर हिस्से में जल प्राप्त होता है।
किंतु शुद्ध जल मात्र 3% है।
धरती पर मात्र 0.007%
पेयजल है।
और उसमें भी अधिकतर बर्फ के रूप में है।
क्या आपको पता है?
बड़ी मुश्किल से 1%
शुद्ध जल ही लोगों मिल पाता है।


क्या आपको पता है?
कि जल संकट आने वाला है....
क्या आपको पता है?
आपके घर पहुँचने वाला शुद्ध जल का
एक चौथाई हिस्सा किस तरह उपयोग में लाते हैं
हमारे जल स्रोत
समाप्ति की ओर हैं।
शौचालय
कपड़े धोने
मुँह धोने
नहाने
के लिए हम लगभग...
375
लीटर जल का उपयोग करते हैं


क्या आपको पता है?
लाखों लोग दूषित जल के कारण
एक स्थान से दूसरे स्थान जा रहे हैं।
बीसवीं शताब्दी में
जनसंख्या
वृद्धि का दर तिगुना था।
3x
हर तीन में से एक आदमी
स्वच्छ जल की पहुँच से दूर है।
जबकि जल के उपयोग में
छहगुना वृद्धि हुई।
6x
3x


हर 5 में से 1 व्यक्ति को
पेयजल नहीं मिलता।


संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार
हर पंद्रह सेकंड में
एक बच्चे की मौत
जल से जुड़ी बीमारियों
के कारण होती है।


संसार भर में जल की समस्या
चिंता का कारण बना हुआ है।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. हमारे जीवन में जल क्या महत्व है?
2. धरती पर हर हिस्से में जल है, किंतु स्वच्छ जल की मात्रा बहुत कम है। ऐसी स्थिति में जल का सदुपयोग कैसे करेंगे?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. हमारे घर पहुँचने वाले जल का उपयोग हम किसके लिए कर रहे हैं?
2. जल की समस्या भविष्य में क्या आपदाएँ ला सकती हैं?
3. जल की समस्या का समाधान क्या है?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

- सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है।
- सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं पूरी दुनिया के आदर्श हैं।

(ई) गद्यांश पढ़कर कोई चार प्रश्न बनाइए।

जल को दूषित होने से बचाने के लिए हमें कुछ कदम उठाने होंगे। हमें शहरों की गंदगी तथा कल-कारखानों के कचरे को नदियों में गिराने से रोकना होगा। कुएँ के जल को दूषित होने से बचाने के लिए उनको ढकने की व्यवस्था करनी होगी। जिन नदियोंसे पीने का पानी लिया जा रहा है उनमें कपड़े धोने अथवा पशुओं को नहलाने पर रोक लगानी होगी। नदियों के पानी को प्रदूषण रहित रखने में सरकार के साथ सहयोग करना होगा।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए।

1. ''जल ही जीवन है।'' शीर्षक से आपका क्या अभिप्राय है?
2. जल स्रोतों के रखरखाव के बारे में आप क्या सुझाव देना चाहेंगे?
3. जल का दैनिक जीवन में क्या उपयोग है? अपने शब्दों में लिखो।

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

1. आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इस समस्या के समाधान के लिए सभी देशों की सरकारों की ज़िम्मेदारी है?
2. ''पाँच में से एक आदमी को पीने के लिए साफ़ पानी नहीं मिल रहा है।'' इस कथन के कारणों पर अपने विचार लिखिए।

(इ) **सृजनात्मक अभिव्यक्ति**

''जल ही जीवन है।'' इस विषय पर एक सुंदर सा पोस्टर बनाइए।

(ई) **प्रशंसा**

आपकी पाठशाला में जल संरक्षण समिति किस तरह काम कर रही है, के बारे में बताते हुए अन्य सुझाव भी दीजिए।

भाषा की बात

(अ) 'प्रतिशत' शब्द 'प्रति' शब्दांश से बना है। यह शब्द उपसर्ग प्रधान शब्द है। ऐसे ही पाँच उपसर्ग वाले शब्द अपनी ओर से लिखिए।

(अ) नीचे दिये गये वाक्यों के काल सूचना के अनुसार बदलकर लिखिए।

(अ) हम सभी जल पर निर्भर प्राणी हैं। (भूतकाल में बदलिए।)

(आ) हम बिना भोजन के एक महीने तक रह सकते हैं। (भविष्य काल में बदलिए।)

(इ) धरती पर मात्र ०.००७ प्रतिशत पेयजल है। (भूतकाल में बदलिए।)

(ई) जल ही जीवन है। (भविष्य काल में बदलिए।)

(इ)

(ई)

परियोजना कार्य

'जल' सभी के लिए ज़रूरी है। अधिकांश कवियों ने इस पर लिखा है। 'जल' विषय हमेशा से कवियों की पहली पसंद रही है। ऐसा क्यों? अपने कारण बताते हुए भाषा की दृष्टि से जल शब्द का विश्लेषण कीजिए।

उपवाचक

अनोखा उपाय

- रावूरि भरद्वाज

कई साल पहले की बात है। एक राज्य था। जिसका नाम हरितनगर था। हरितनगर का राजा कुमारवर्मा था। वह एक अच्छा शासक था। कुमारवर्मा के शासन काल में राज्य हरा-भरा रहता था। लेकिन एक समय ऐसा आया, राज्य में सारी फसलें सूख गयीं। तालाब, गड्ढे सूख गये। केवल दो ही जीव नदियाँ बची थीं। जो छोटी-छोटी नहरें बनकर रह गयीं।

राज्य में पशुओं का चारा भी मिलना मुश्किल हो गया। कई किसान अपने-अपने पालतू जानवर सस्ते दामों पर बेचने लगे। ऐसी हालत में राजभंडार का अनाज प्रजा में बाँट दिया जाने लगा। अड़ोस-पड़ोस के राज्यों से अनाज उधार लिया जाने लगा। फिर भी राजा को भविष्य की चिंता सता रही थी। राजा उत्पन्न परिस्थितियों के बारे में गंभीर रूप से सोचने लगा लेकिन इसका कोई पता नहीं चला। राजा के मन में ये सवाल उठ रहे थे कि अड़ोस-पड़ोस के सभी राज्य हरे-भरे हैं। वहाँ की प्रजा भी सुखी है। लेकिन न जाने इस राज्य में ऐसा क्यों हो रहा होगा...? क्या कारण हो सकते हैं...? इस समस्या का हल कैसे किया जायेगा...?

राजा कुमारवर्मा ने इस समस्या के हल की चर्चा के लिए कई बुद्धिमानों, हाज़िरजवाबदारों और विद्वानों को बुलवाया। चर्चा में कुछ बुद्धिमानों ने बताया- ''हे महाराज, भूलें कई तरह की होती हैं। कुछ भूलें सरलता से पहचानी जाती हैं तो कुछ पहचानी नहीं जातीं।'' कुछ हाज़िरजवाबदारों ने बताया- ''हे राजन! कुछ भूलों का आभास होता है और कुछ का आभास भी नहीं होता।'' कुछ विद्वानों ने बताया- ''हे प्रभु, कुछ भूलें सुधार के रूप में हो जाती हैं तो कुछ सुधार भी भूलों के रूप में बदल जाते हैं। ऐसी ही कोई जानी-अनजानी बात छिपी होगी जिससे आज राज्य में यह समस्या उत्पन्न हुई है।

राजा कुमारवर्मा ने पूछा- ''अब आप ही बतायें कि मुझे क्या करना चाहिए?''

सभी ने विचार-विमर्श कर राजा को यह सलाह दी- ''सभी तरह से खुशहाल किसी राज्य के राजा से भेंट करें। वहाँ के शासन नियमों का पता करें यहाँ के शासन नियमों में सुधार करें। इससे राज्य की समस्या का हल अवश्य हो सकता है।''

राजा कुमारवर्मा को यह उपाय अच्छा लगा। उसने तुरंत अपने पड़ोसी राज्य के महाराज सत्यसिंह से भेंट करने का निर्णय लिया और सेवकों से संदेश भेजा- ''राजाधिराज, महाराज सत्यसिंह जी को सादर प्रणाम। हमारे राज्य में अकाल से जनता त्रस्त है। इस समस्या के हल के लिए आपकी उचित सलाह व आपके शासन नियमों की जानकारी के लिए हम आपके यहाँ पधारना

चाहते हैं। आशा है कि आप हमारा निवेदन स्वीकारें।''

महाराज सत्यसिंह ने अपने संदेश में लिखा- ''आप और हम पड़ोसी राजा हैं। किसी भी समस्या में एक-दूसरे का हाथ बँटाना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे राज्य में आपका हार्दिक स्वागत है। आप हमारे आदरणीय अतिथि हैं। अतिथि के रूप में आपका सत्कार करने का सौभाग्य हमें मिल रहा है, इसके लिए हम कृतज्ञ हैं।''

इस प्रत्युत्तर के पढ़ते ही राजा कुमारवर्मा को अपने राज्य की समस्या का हल करने का कुछ हद तक उपाय मिल ही गया था। फिर भी राजा स्वयं पड़ोसी राज्य के राजा से भेंट करना चाहते थे।

देखते-देखते वह दिन आ ही गया। राजा कुमारवर्मा का पड़ोसी राज्य में भव्य स्वागत हुआ। राज्य देखकर राजा आश्चर्यचकित होने लगे। चारों तरफ जलाशय भरे हुए थे। नदियाँ लबालब थीं। नहरें बह रही थीं। ठंडी हवाएँ सन-सना रही थी। खेत भरी हरियाली से भिन-भिना रहे थे। फूलों के चमन खुश्बू से महक रहे थे। बाग-बगीचे फल-फूलों से लदे थे। ये सारी चीज़ें देखकर राजा कुमारवर्मा को बेहद खुशी हुई।

महाराज कुमारवर्मा की भेंट महाराज सत्यसिंह से हुई। ''मित्र आपका राज्य किसी स्वर्ग से कम नहीं है। मुझे लगता है कि जिन शासन नियमों को मैं नहीं जानता, उनका आप पूरा-पूरा पालन कर रहे हैं। इसीलिए आपकी प्रजा सुखी है। मैं भी अपनी प्रजा को सुखी देखना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे सुशासन का हितोपदेश दीजिए।''

महाराज सत्यसिंह ने पहले तो मना कर दिया। किंतु राजा कुमारवर्मा के अनुरोध पर उन्होंने कहा- ''नहीं महाराज, मुझे मजबूर मत कीजिए। मैं दोषी हूँ। जो दोषी होता है, उसे हितोपदेश करने का कोई अधिकार नहीं होता। मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। मैं एक बार अपने अंगरक्षक के साथ इसी तरह उपवन में चर्चा कर रहा था। तभी मुझे राजमाता के पास ज़रूरी बात करने के लिए जाना पड़ा। मैंने अंगरक्षकों को अपने लौटने तक वहीं खड़े रहने का आदेश दिया था। राजमाता से बात करते-करते रात हो गयी। वहीं पर मैंने भोजन किया। सो गया। अगले दिन सुबह उठकर देखा तो खूब बारिश हो रही थी। सेवकों ने बताया कि देर रात से बारिश हो रही है। जब मैंने उपवन लौटकर देखा तो अंगरक्षक उसी स्थान पर भीगते हुए खड़े हैं। मैं बातचीत में इतना निमग्न हो गया था कि अंगरक्षकों को जाने के लिए भी नहीं कह सका। यह मेरी भूल थी। अतः ऐसी भूल करने वाले राजा को हितोपदेश देने का कोई अधिकार नहीं। मुझे क्षमा कीजिए।''

राजा कुमारवर्मा ने महाराज सत्यसिंह की इस घटना को पूरे ध्यान से सुना। उन्हें लगा कि राजमाता ही उन्हें हितोपदेश दे सकती है। उन्होंने राजमाता के दर्शन किये और अपनी इच्छा बतायी।

''पुत्र, सच कहूँ तो मैं भी दोषी हूँ। एक बार मेरे पुत्र ने अपनी पत्नी के लिए सुंदर ज़ेवर बनवाये। मेरे मन में ज़ेवर के प्रति लालच पैदा हो गया। यदि मैं अपने पुत्र या बहू से ज़ेवर माँगती, तो वे कभी मना नहीं करते। एक राजमाता का ज़ेवरों के प्रति आकर्षण होना दोष है। किसी दूसरे की वस्तु के प्रति लालच रखना भी ग़लत है। ऐसी भूल करने वाली मैं, हितोपदेश करने के योग्य नहीं समझती।''

राजा कुमारवर्मा आश्चर्य में पड़ गया। बाद में राजगुरु से भेंट की और उनसे उपदेश के लिए निवेदन किया।

तब राजगुरु ने कहा, ''महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। मैं इसके योग्य नहीं। एक बार सुदूर देश से एक पंडित आया था। राजदर्शन करना चाहा। उसके पांडित्य की जाँच करने का समय न होने के कारण मैंने राजा को यह कह दिया कि वह बड़ा पंडित है। राजा मुझ पर असीम विश्वास रखते हैं। उन्होंने पंडित को ढेर सारा इनाम दिया। आगे चलकर मुझे पता चला कि वह पंडित केवल औसत था। मेरे आलस के कारण मैं राजा को उचित मार्गदर्शन न कर सका। ऐसी भूल करने वाला मैं, हितोपदेश के योग्य नहीं समझता।''

कुमारवर्मा बड़ी सोच में पड़ गया।

इन तीन घटनाओं से उसे यह सीख मिली कि हमें छोटी से छोटी भूल भी नहीं करनी चाहिए। यदि हमसे कोई भूल हो तो उसे सुधार लेना चाहिए।

राजा ने इस सीख का पालन किया। कुछ ही दिनों में उसका राज्य खुशहाल बन गया।

(वर्ष २०१२ के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित स्वर्गीय श्री रावूरि भरद्वाज तेलुगु के प्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत कहानी उनकी प्रसिद्ध रचना 'बंगारु कुंदेलु' से ली गयी है। इसका अनुवाद श्री सय्यद मतीन अहमद ने किया है।)

प्रश्न :

1. राजा कुमारवर्मा के राज्य में अकाल की स्थिति क्यों उत्पन्न हुई होगी?
2. अकाल की समस्या के परिष्कार के लिए राजा ने क्या-क्या उपाय सोचे होंगे?
3. राजा सत्यसिंह ने राजा कुमारवर्मा का स्वागत कैसे किया?
4. आपकी दृष्टि में किसकी भूल सबसे बड़ी थी और क्यों?
5. राजा कुमारवर्मा की जगह पर यदि तुम होते तो अकाल की समस्या से कैसे जूझते?